

VAIDENI

र
द
ह



अगस्त १९५६

मैथिली क
सर्वात्म मासिक

एक प्रति

३७ नं.पै०

संस्थापकक प्रेरणा : इन्द्रकान्तमिश्र (कुमार)

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'
श्रीसुधांशु 'शेखर'
चौधरी
प्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति ३७
विशेषांक ७५
वार्षिक ४)
आजीवन ५१)
संरक्षक १२५)

[निःशुल्क डाक-व्यय]

श्रीकृष्णकान्तमिश्र
द्वारा दरभंगा प्रेस
कम्पनी (प्रा०) लि०
दरभंगामे मुद्रित
एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान
वैदेही समिति,
लालबाग, दरभंगा

कथा-पिहानी

प्रो० श्रीहरिमोहनभा (1) खट्टरककाक तरंग ३४१
डाक्टरश्रीव्रजकिशोरवर्मा कून् लोर ३५८
श्रीसुधांशु 'शेखर'चौधरी पुरान बात ३५०
श्रीहंसराज कवि-प्रिया ३६५

कविता

श्रीअमर साओन ३८१
श्रीगंगाधरमिश्र पन्द्रह अगस्त ३७३
श्रीदीनानाथभा आह ! ई की ? ३७२

विविध

ज्यौ० श्रीलक्ष्मीकान्तभा मैथिली एवं संस्कृतमे
एम.एल.ए. आभनन्दन-पत्र ३७४
श्रीपुण्यानन्दभा रा टकलौइया ३७५
श्रीशंकरामिश्र मिथिला चल-चित्र ३७६
श्रीरमानन्दमिश्र

स्तम्भ

ज्यौ० श्रीसीतारामभा पाठकक पृष्ठ ३८१
— समाचार-संकलन ३८०

वैदेहीक संस्थापकक प्रेरणा
इन्द्रकान्तमिश्र (कुमार)

क

पुराय-स्मृतिमे

['वैदेही' दिसिसँ प्रथम वार्षिक संस्मरण]

जन्म: २३-७-१९५३ अस्पतालमध्य

निधन: १७-८-५८ अस्पतालमध्य

समाचार-संकलन

—मैथिली - साहित्यिक प्रसिद्ध सेवी ओ पोषक बनैली-नरेश कुमार कृष्णानन्दसिंहक आकस्मिक निधनसँ सर्वत्र शोक व्याप्त अछि ।

—कुमारश्रीगंगानन्दसिंह, शिक्षा-मन्त्री, बिहार द्वारा सरिसव (दरभंगा)मे महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह कालेजक उद्घाटन भेल अछि । एहि महाविद्यालयक सचिव मैथिलीक प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसरश्रीतन्त्रनाथभा निर्वोचित भेल छथि । प्रो०श्रीउमानाथभा प्रथम प्रिंसिपल नियुक्त भेल छथि ।

—महामहोपाध्यायडाक्टरश्रीउमेशमिश्र द्वारा जगदीशनन्दन कालेज, बाबूबरही (राजनगर, दरभंगा)क उद्घाटन-कार्य सम्पन्न भेल अछि । एहिठामक प्राचार्य - पदपर प्रोफेसरश्रीपरोक्षितमिश्र छथि एवं मैथिलीक भविष्य साहित्यकार श्रीपरमेश्वरमिश्र, एम्. ए., बी. एल. मैथिली-विभागाध्यक्ष छथि ।

—अनन्त कालेज, पण्डौलक प्राचार्य प्रसिद्ध मातृभाषा सेवी श्रीरमाकान्त भा एम० ए०, एल० ए० भेल छथि ।

—गत सौराठ सभामध्य कालिदास-जयन्ती समारोह सम्पन्न भेल जाहिमे बिहारक मुख्य-मन्त्री डा०श्रीकृष्णसिंहजी एवं कुमारश्रीगंगानन्द सिंह, शिक्षा-मन्त्री उपस्थित छलाह । पण्डितश्रीलक्ष्मीकान्तभा भू० पू० प्रधान न्यायाधीश, पटना उच्च न्यायालय, राजपण्डितश्रीबलदेवमिश्र पण्डितश्रीराधानन्दनभा, एम. एल. ए., पण्डितश्रीलक्ष्मीकान्तभा, एम. एल. सी. आदि विशिष्ट व्यक्ति हरि उत्सवमे सम्मिलित भेलाह ।

—बिहार सरकार द्वारा प्रायः उच्चैठ दुर्गास्थानमे (बेनीपट्टी, दरभंगा) कालिदास-स्मारक बनैवाक योजना प्रस्तुत भै रहल अछि ।

—म०म०डा०श्रीउमेशमिश्रजी (मैथिलीक सुप्रसिद्ध विद्वान्) प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग एवं प्रोफेसरश्रीसीताराममिश्र, कुबेर कालेज, डिबाइ तथा श्रीवेदमित्रमिश्र, दोहद बड़ौदा (प्रवासी मैथिली साहित्यकारद्वय) आव अवकाश-प्राप्त कै मैथिली-साहित्यिक सेवा पूर्णरूपेण करवाक हेतु सचेष्ट छथि ।

—प्रोफेसरश्रीरमानाथभाजीक प्रायः ५०० पृष्ठक अपूर्व गद्य-संग्रह शीघ्र प्रकाशित भै रहल अछि । एहि संकलनमे अनेक विशिष्टता अछि ।

—वैद्यनाथ-देवघरक मैथिली-साहित्य-परिषद् द्वारा श्रीकृष्णकान्तमिश्र, मंत्री, वंदेही समितिक सम्मानमे श्रीवेदानन्दभा, एम्. ए. आय कर विभाग, देवघरक अध्यक्षतामे एक गोट विशेष समारोह आयोजित भेल छल ।

खट्टर ककाक तरंग

(प्राचीन संस्कृति)

प्रोफेसर श्रीहरिमोहनभा

ओहि दिन खट्टर ककासँ प्राचीन संस्कृतिपर गप्प आरम्भ भ' गेल । हम कहलिऐन्ह—देखू खट्टर कका, ताहि दिनक ऋषि-मुनि केहन त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत करथि ! गुफा-कंदरामे रहि कंद-मूल खा तपस्या करथि । ब्राह्मी मुहूर्त्तमे उठि नदीमे स्नान कय, वल्कल पहिरने, कमंडलुमे जल भरने कुटीमे आबि, कुशासनपर बैसि देवताक ध्यान धरथि । केहन पवित्र सात्त्विक जीवन छलैन्ह ! ओखन धरि दाढ़ी ओ गेरुआ वस्त्र देखि कऽ लोककेँ श्रद्धा उत्पन्न भऽ जाइ छैक ।

खट्टर कका भांगक पत्ती धोइत बजलाह—हौ, जंगलमे हजाम नहि भेटैन्ह तेँ दाढ़ी । धोबी नहि भेटैन्ह, तैँ कषाय रंग । तेलक अभावमे जटा । वस्त्रक अभावमे वल्कल । अन्नक अभावमे कंद-मूल । तकरो अभावमे एकभुक्त वा उपवास । लोटाक अभावमे कमंडलुसँ पानि पीवथि । थारीक अभावमे पातपर वा हाथपर खाथि । ई सभ त्यागक सूचक नहि । अभावक सूचक थीक । अप्राप्तिस्तत्र कारणम् ।

हम—परन्तु.....

ख०—परन्तु की ? यदि हुनका लोकनिकेँ पानि भेटितैन्ह त पकोहा किएक जोड़ितथि ? गुलाबजामुन भेटितैन्ह तेँ गुलाबी किएक तोड़ितथि ? बर्फी भेटितैन्ह त विसौढ़ किएक कोड़ितथि ? एक खजूर सिंघाड़ा भेटितैन्ह त वनक खजूर-सिंघाड़ा किएक तकितथि ?

हम—ओ लोकनि वीतराग रहथि । इच्छाकेँ जितने रहथि ।

ख०—ई बात हम नहि मानबौह । हुनको लोकनिकेँ सौख कम्म नहि छलैन्ह । फूले जोहने भेल फिरैत छलाह । 'स्तो'क अभावमे चंदन आर पाउडरक अभावमे भस्म लगवैत छलाह । बेल्टक स्थानमे मूँजक डराडोरि पहिरैत छलाह । आभूषणक स्थानमे तुलसी वा रुद्राक्षक माला । मखमलक स्थानमे भालुक खाल पर बैसैत छलाह । हौ, युग बदलै छैक, फैशन बदलै छैक परन्तु मनुष्यक वासना नहि बदलै छैक ।

हम—खट्टर कका, ओहि युगक संस्कृतिपर दोसर छलैक ।

ख०—हौ, ताहि दिन चारुकात अरण्ये अरण्य रहैक । तखन जंगली सभ्यतामे जे सभ वस्तु होइ छैक से सभ ताहि दिन छलैक । मृगशाला, व्याघ्र, चर्म, कुशासन, धूप, चंदन, यव, तिल, मधु, चमर, भोजपत्र । ओखन द्वापरक दृश्य देखबाक हो त गारखंडमे जाकऽ देखि आवह । वैह धनुष-बाण, पैश मोरपंख, वैह बांसुरी, वैह एकवस्त्रा नारी । यदि आव सभटा मिल, सैलून, लौह्री ओ दर्जीक दोकान बंद भऽ जाय त पुनः त्रेता सत्ययुगक दृश्य उपस्थित भऽ जाय । विलासिताक सोत सभ मुनि दहौक, सभतरि मुनिप मुनि देखाइ पड़थुन्ह ।

हम०—खट्टर कका, ओ लोकनि केहन तपस्या करथि ?

ख०—हौ, तपस्या स्वाइत करथि । पेटक समस्या तपस्या करवै छैक । से हर जोतने हो, वा हर जपने । कोदारि धैने वा नाक धैने । हाथ-पैर डोलौने वा घंटी डोलौने ।

हम०—खट्टर कका, ओ लोकनि एकटा कौशेय वस्त्र पर जाड़ काटि लैत छलाह । ई कि साधारण बात छैक ?

ख०—हौ, आधुनिक युवती ओहूँ बेसी फिलमिल रेशमपर जाड़केँ जीबि लैत छथि । ओ कि कम तपस्विनी थिकीह ? प्रदर्शनक हेतु जे कष्ट उठाओल जाइ छैक से वह नहि वृष्णि पड़ै छैक ।

हम—खट्टर कका, ओ लोकनि अग्निहोत्री छलाह ।

खट्टर कका बिहुसैत जनैलाह—हौ, जाड़क दुइएटा उपचार छैक, षोड़शी वा बोड़सी । से प्रथम तँ उपलब्धे नहि छलैन्ह, तखन धूनी रमौने रहैत छलाह । स्वाइत पंचाग्नि साधनकेँ एतेक महत्त्व दैत छलाह ।

हम—खट्टर कका, ओ लोकनि आध्यात्मिक दृष्टिसँ यज्ञ करैत छलाह ।

खट्टर कका भभाकऽ हँसि पड़लाह । हम पुछलिऐन्ह—खट्टर कका, ईसलहुँ कियेक ?

खट्टर कका भाँग पसचैत चजलाह—ई बुझवा हेतु बहुत पाछाँ जाय पड़-तौह । प्राग्वैदिक युगमे । पहिने हमरा लोकनिक पुरुखा अग्निक रहस्य नहि जनैत छलाह । दावानल वा बिजुली देखि चकित भऽ जाथि । कालक्रमे पता

लगलैन्ह जे घर्पणसँ आगि उत्पन्न कैल जा सकैछ । ई विद्या हाथमे अचितहि ओ लोकनि खुशीसँ नाचय लगलाह । पहिने काँचे माँस खाइ छलाह । आव पका कऽ खाय लगलाह । आगि जीवित मांस (आम) ओ मुइल मांस (कव्य) दुहू केँ सोन्हगर सुपाच्य बना दैन्ह तँ ओकरा 'आमाद' ओ 'कव्याद' कहि स्तुति करय लगलाह । पहिने काँचे यव - तिल भक्षण करैत छलाह । आव लावा-ओरहाक स्वाद भेटय लगलैन्ह, आँटाकेँ भूजिकऽ पुरोडाश बनावय लगलाह । पहिने जाइमे ठिठुरैत रहथि । आव आगि तपवाक आनन्द भेटलैन्ह । पहिने रात्रिक अन्धकारमे भयसँ नुकाएल रहथि । आव प्रकाशमे सभ फिछु सूक्ष्म लगलैन्ह । 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' ई प्रार्थना फलित भेलैन्ह । अग्निक ज्वालासँ जंगली पशु हड़कि कऽ दूर पड़ा जाइन्ह । ई सभ निश्चिन्त भऽ सूतय लगलाह । जखन एतेक उपकार अग्नि देवतासँ होमय लगलैन्ह तखन कोना ने हुनकर गुण गावथु ? अग्नि-देवताक गुणगानसँ वेद भरल अछि । 'अग्निमीले पुरोहितम्...'

हम कहलिऐन्ह—परन्तु यज्ञक विधान.....

खट्वर कका बजलाह—एखन कोनो अगुताइ त ने छौह ? तखन सुबह । अग्निक आविष्कारसँ हमरा पुरुखा लोकनिकेँ बड़का शक्ति हाथमे आवि गेलैन्ह । परन्तु आगि बनैबामे बड़ परिश्रम पड़ैन्ह । घंटाक घंटा पाथर वा काष्ठ रगड़य पड़ैन्ह, तखन जाकऽ गोटेक स्फुलिंग बहराइन्ह । एहि द्वारे ई लोकनि परम यत्नपूर्वक अग्निक रक्षा करय लगलाह । अग्नि नहि जाय ताहि हेतु घृत समिधा दय कऽ ओकरा प्रज्वलित राखय लगलैन्ह । यैह अग्निहोत्रक रहस्य थीक ।

खट्वर कका भाँगक पानि पसा पत्तोकें कुण्डीमे रखलन्हि, तखन सोटासँ घोटैत बाजय लगलाह—हमरा लोकनिक पुरुखा पाथरक खंडसँ घेरि कऽ अश्मव्रज बनावथि । चारुकातसँ माटि काटि कऽ चवूतरा (चत्वर) बनाओल जाय । बीचमे बड़का समिध (सिल्ली) राखल जाय । वर्षासँ अग्निक रक्षा हेतु ऊपर तृण छाड़ल जाय । ओहि मंडपमे बैसि ओ लोकनि अग्निक परिचर्या करथि । होता लोकनि आहुति दैत जाथिन्ह । उद्गाता गीत गाविक उत्साह बढ़वथिन्ह, ब्रह्मा बैसि कऽ निरीक्षण करथि । सभक कार्य बाँटल रहैन्ह । केओ जारनि काटथि । केओ खढ़ - पात आनथि । केओ टाट बान्हथि ।

केओ चार छाड़थि । केओ केरा आनि कऽ आसन बनावथि । केओ बाँसक
करचीसँ चँगेरा बनावथि । केओ माटिक बासन बना आगि पर पकावथि ।
बेटी सभ गाय-भेड़ी दूहथि, तेँ दुहिता । मांस छोड़ा कऽ आगिमे सेदथि, तेँ
शस्त्रिता । पाथर पर अन्न कूटल - पीसल जाय । केओ सोमलता उखाड़ि
कऽ लावथि । केओ पीसिकऽ रस तैयार करथि । महावेदी पर बैसिकऽ सोम-
पान होय । दूध, दही ओ घृतक पथार लागि जाय । पहिने अग्नि देवताकें
हवि देल जाइन तखन हुतशेष बाँटल जाय । रंग-विरंगक गप्प जमय । चूम्ह
त ओ मनुष्यक सर्वप्रथम क्लव छल जतै सभलोक एक संग बैसि कऽ खाथि,
पीबथि, आनन्द करथि आर गावथि—संगच्छध्वम्, संवदध्वम्, सं वो
मनांसि जानताम् । सह नो अवतु, सह नो भुनक्तु, सहवीर्यं करवावहै ।

हम—खट्टर कका, हुनका लोकनिक जीवनक भ्येय की रहैन्ह ?

ख०—से तँ वेदक मंत्रे सभसँ पता लागि जेतौह । धनधान्य ओ सन्तति
बढ़य । समय पर मेघ बरसय । खूब अन्न उपजय । गाय खूब दूध देथि ।
बड़द खूब जोतथि । गाछ खूब फरय । जड़ी-बूटी भेटैत रहय । बेसी दिन
जीवी, देखी, सुनी, आनन्द करी । बस, आर की चाही ? एखनो धरि
दूर्वाक्षतक मंत्रमे यैह सभ आशीर्वाद देल जाइ छैक । †

हम—खट्टर कका, दूर्वाक्षतक की अभिप्राय ?

ख०—हौ अपना खैबाक हेतु चाउर आर मालजालक हेतु घास ई दूनू
वस्तु पर्याप्त रहय । यैह एक अभिप्राय । औखन जे चतुर्थीमे बस-
कटी होइ छैक से ओही पर पुराक पालन थिकैक । जेना ताहि दिन ऊखरि
मे सोन कूटल छल ताँ आइ-काल्हि अठंगर कूटल जाइ अछि,
पहिनहि जकाँ आगिक चारु दत फेरा लगाओल जाइत अछि, लावा छिड़ि-
आएल जाइत अछि । ई सभ विधि ताहि दिनक स्मारक थीक ।

हम—खट्टर कका, हुनका लोकनिक जीवन केहन सुखमय छलैन्ह !

ख०—हौ, वैदिक युगक लोक मस्त रहथि । खाउ, पीबू, मौज करू ।
परन्तु पछाति कऽ उपनिषदबला ऋषि मनहूस बहरैलाह । तेहन अभागल

† दोग्ध्री धेनुर्गोठानड्वान..... निकामे निकामे नः पर्यन्यो वर्षतु फलवत्यो नः ओषधयः
पच्यन्ताम्, योगक्षेमो नः कल्पताम् ।

जे इन्द्रियेसँ युद्ध ठानि देलन्हि । तेँ हकन्न कानय लगलाह । हौ मानल जे इन्द्रिय घोड़ाक समान थीक, त कि घोड़ा के सहा कऽ सठा दी ? तखन रथ कोना चलत । खाली लगामे हाथमे नेने कोन फल ? स्मृतिकारो ऐलाह त वैह लगाम हाथमे नेने । हिनका लोकनिकेँ जे अपना नहि पचैन्ह से निषिद्ध । तेँ मांसकेँ दूसथि, लहसन-पेयाजकेँ गारि पढ़थि, स्त्रीक निन्दा करथि, भोग केँ त्याज्य कहथि ।

हम—एकर कारण की, खट्टर कका !

ख०—हौ, एकर कारण जे हुनका लोकनिकेँ अपना भोग नहि छलैन्ह । जे वस्तु अपना प्राप्त नहि से दोसर किएक उपभोग करत ? यैह ईर्ष्या निवृत्ति मार्गक जड़ि थीक । देखै छह नहि, एखनो धरि जाहि पंडितकेँ संग्रहणी रहैत छैन्ह से अपना विद्यार्थीकेँ अचार नहि खाय दैत छथि ।

हम—खट्टर कका, ओ लोकनि बुझैत छलाह जे एहीमे लोकक कुशल छैक ।

खट्टर कका मुसकैत बजलाह—‘कुशल’क अर्थ तोरा बूझल छौह ? हमरा लोकनिक, पुरुषा अधिकतर खालिए पैर चलैत छलाह । आइ-काल्हि जकाँ पनही त रहैन्ह नहि । बन बाध दऽ कऽ चलथि । पैरमे कुश अंकुश जकाँ छेदि दैन्ह । तरबा छलनी भऽ जाइन्ह । स्मृतिकार लोकनि चतुर छलाह । सभकेँ कहय लगलथिन्ह—कुश उखाड़ै जाह । हरठिया फरठिया ओना अंठा दितैन्ह, तेँ एकटा उपाय रचलन्हि । कुशकेँ तनेक महत्त्व दऽ देलथिन्ह जे

कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये ते

कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान् मे देहि मेमिनी ।

बस, विवाह उपनयन, श्राद्ध—समस्त यज्ञ ओ पूजामे कुशक व्यवहार चलि पड़ल । पवित्री, त्रिकुशा, मोढ़ा, कुशासन बनैवाक हेतु लोक कुश उखारि कऽ राख लागल । भादव मासमे जखन सभसँ बेसी जंगल रहै छैक कुशोत्पादनक दिन कायम कैल गेल । बिना जन-वनिक केवल पुण्यक लोभ पर सामूहिक रूपेँ कुश उखड़ऽ लागल । जाहि घरमे कुश नहि, तकर कुशल नहि । एहि द्वारेँ ताहि दिन कुशल पूछल जाइन्ह त ओकर अभिप्राय जे घरमे पर्याप्त कुश अछि कि ने ? वैह व्यक्ति कुशल कहावय जे कुश कटबामे निपुण हो । हौ, ताहि दिनक ऋषि चाणक्यक पितामह रहथि ।

हम—खट्टर कका ताहि दिन आतिथ्य सत्कारक केहन महत्त्व रहैक ?

खट्टर कका बजलाह—हौ, ब्राह्मण लोकनि अपने पहुनइ करय जाथि त
अगियाएले पहुँचथि । 'वैश्वानर प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहम् ।' अर्थात्
ब्राह्मण देवता साक्षात् अग्नि-स्वरूप होइ छथि । तात्पर्य जे हुनका तुरन्त
समिधा वा भोजन भेटक चाही । जे अलच्छा हुनका इच्छापूर्ण भोजन
नहि करैतैन्ह तकर धीया-पूता माल-जाल ओ सभटा पुण्य नष्ट भऽ जैतैक ।[†]
हौ, कहाँ तँ शरीर अधम थीक आर तुच्छ उदरक पूर्ति हेतु एतेक प्रपंच ।
जखन शरीरक कोनो महत्त्वे नहि त फेर चरण-सेवा किएक करबैत छलाह ?
हौ, ई लोकनि एक्को आरि पर नहि रहैत छलाह । अनका त उपदेश
देथिन्ह जे 'अतिथि देवो भव' आर अपना ओहिठाम अतिथि पहुँचि जाइन्ह
त खिसिया कऽ ओकरा 'गोत्र' कहथिन्ह । हौ, विकट पाहुनसँ ताहू दिन
लोक डराइ छल ।

हम—खट्टर कका, ओहि युगक मिलान एहि युगसँ किएक करैत छिएक ?
कहाँ सत्ययुग कहाँ कलियुग ।

खट्टर कका भांगमे मरीच मिलबैत बजलाह—हौ, सभ युगमे लोक वैह
रहैत अछि । तखन परिस्थिति जेना नचबैत छैक तेना नचैत अछि ।
देखह ।

कलिः शयानो भवति संजिहानस्तु द्रापः

उत्तिष्ठेत्कृत्तुं भवति कृतं संपद्यते चरन् ।

पंडित लोकनि एकराई लगवै छथि जे सत्ययुग चलैत छल, कलियुग
सूतल अछि । परन्तु असल अर्थ हम तोरा बुझा दैत छिऔह । सत्ययुगमे
पुरुखा सभ पशु-पक्षी जकाँ चरैत छलाह । पैरमे तेहन घुश्घुरा लागल
छलैन्ह जे कतहु एकठाम स्थिर भऽ कऽ नहि रहय दैत छलैन्ह । ओखन
कंजर सभकेँ नहि देखैत छहौक ? खिड़की पटिया ओ माल-जाल नेने
बौआएल फिरै अछि । त्रेतामे किछु स्थैर्य आबय लगलैक । लोक हर
जोतय लागल । घर बना कऽ रहय लागल । एकठाम पैर जमय लगलैक ।

[†] इष्टापूर्ते पुत्र पशूश्च सर्वान् एतद् वृत्ते पुरुषस्याल्पमेधसो, यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे । (कठोपनिषद्)

द्वापरमे लोक आर सुभ्यस्त भेल । सुखक साधन बढ़लैक । लोक अ राममे आबि औषाध लागल । आर कलियुगमे त ऐश्वर्य ओ विलासितक हदे हिसाब नहि । लोक निश्चिन्त भऽ कऽ सूतल अछि । एहि तरहें मानव सभ्यताक क्रमिक विकास भेल छैक ।

हम—खट्टर कका ! अहाँ त विलक्षण अर्थ लगा दैत छिएक । परन्तु एतबा अवश्य मानय पड़त जे ताहि दिन धर्मक महत्त्व रहैक, आइ - कालिद धनक महत्त्व छैक ।

ख०—हौ, धनक महत्त्व सभदिनसँ छैक । आइयो-कालिद रुपैयाक जोर सँ साँच के झूठ कैल जा सकै अछि । ताहू दिन सैह बात रहैक । उपनिषद् मे पर्यन्त ई बात भेटतौह । हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

हम—खट्टर कका, ताहि दिन देवताक पूजा होइन्ह एखन धनिकक पूजा होइछ ।

खट्टर कका भाँगक गोला बनबैत बजलाह—हौ, जैह धनिक, सैह देवता । देवताक अर्थ जे चमकैत रहय । ताहि दिनक राजा सभ रंगविरंगक वस्त्रमे चमकैत रहथि । 'ईश्वर'क अर्थ जकरा ऐश्वर्य होइक । लक्ष्मीपतिक अर्थ जकरा घरमे संपत्ति होइक । 'नारायण'क अर्थ जे जलमहलमे शयन करय । गरुड़वाहनक अर्थ जे शीघ्रगामी यान पर चलय । प्रजापतिक अर्थ जे प्रजाक स्वामी हो । 'हर'क अर्थ जे कर वा मालगु जीतण करय । 'चतुर्भुज'क अर्थ जकर बाहुवल चारुदिस पसरल होइक । 'पंचमुख'क अर्थ जे पाँच गोटाक अंश खाय । हौ, देवताक अर्थ धनिक ।

हम—परन्तु सर्वप्रथम पूजा त गणेशक होइ छैन्ह ?

खट्टर—हौ 'गणेश'क अर्थ गणक दलक सरदार । ताहू दिनक दलपति गजवदन होइत छला ? आर सोधारण जनता मूस जकाँ हुनका भारसँ पिचाइत छल । ई सभ रूपक थिकैक ।

खट्टर कका भाँगक गोलाकेँ हाथसँ चिकनबैत बजलाह—पहिने छोट-छोट दल रहैक । तैँ गणेशसँ श्रीगणेश भेल । पाछाँ जखन राजागण महलमे विहार करय लगलाह तखन अमरालय वा अप्सरालयमे विहार करयबला इन्द्र आदिक कल्पना कैल गेल । जखन एकछत्र सम्राट् होमय लगलाह तखन

‘एकमेवाद्वितीयं’ ब्रह्म कल्पना भेल । हौ, देवता सभ सामंतवादक प्रतीक
निहाह, ब्रह्म साम्राज्यवादक ।

हम—खट्टर कका, ताहि दिन वर्णाश्रम धर्मक केहन सुन्दर व्यवस्था
रहैक !

खट्टर कका लोटामे भाँग घौरैत बजलाह—हौ, ब्राह्मणकेँ बुद्धि छलैन्ह,
बल नहि । क्षत्रियकेँ बल छलैन्ह, बुद्धि नहि । एक बात - बातमे शास्त्र बहार
करैत छलाह दोसर बात - बातमे शास्त्र बहार करैत छलाह ।

हम—ओ सभ सिद्धान्त पर चलैत छलाह ।

खट्टर कका भाँगमे चीनी मिलवैत बजलाह—सिद्धान्त नहि; सनक
कहह । ब्राह्मणकेँ सनक चढैन्ह त वचन गढ़ि लेथि । क्षत्रियकेँ सनक चढैन्ह
त प्रण ठानि लेथि । दूनू तेहने एकभगाह । हौ, हम पुछैत छिओह जे यदि
कोनो राजसे धनुष तोड़ि दितैन्ह त जनक महाराज की करितथि ? यदि
कोनो चांडाले लक्षवेध कऽ दितैन्ह त शिशुपाल की करितथि ? सभ सनकाह
छलाह । सिद्धान्तक पाछाँ बताह । केओ वचन खातिर भिखारी भऽ जाथि ।
केओ आन पर जान दऽ देथि । एही भौँकक पाछाँ कतेको राजा कटि मरलाह,
कतेको रानी जरि मुइलीह, कतेको महल खंडहर भऽ गेल । सौँसे इतिहास तँ
एहीसँ भरल अछि ।

हम—खट्टर कका, ओ लोकनि वीर छलाह ।

ख०—वीर नहि कहह । हौ, रीति नीति मर्यादा सभटा मनुष्येक
बनाओल छैक । जहन समय होइक तेहन करक चाही । कोनो सिद्धान्त एहन
नहि छैक जेहि पर ओही मूनि कऽ लोक चलि सकय ।

हम—परन्तु, ‘सत्ये नास्ति भयं कचित् ।’

ख०—ई फूसि बात थीक । ‘सत्ये चाऽपि भयं कचित् ।’ यदि सन्निपातक
रोगीकेँ सत्य बात कहि देल जाइक त आतंकेसँ ओकर प्राण छूटि जैतैक ।
जाहिसँ प्राणे चलि जाय तेहन सिद्धान्त कोन काजक ?

हम—परन्तु नीतिकार कहै छथि जे अधिकस्याधिकं फलम् ।

ख०—इहो अशुद्ध । यदि वैह सिद्धान्त मानि कऽ चलल जाय त भात
गिल्ल भऽ जाय ।

हम—से कोना, खट्टर कका ?

ख०—‘जतेक वेसी ततेक फल’ तखन त चाउरकेँ आर एक घंटा खदकऽ लेल छोड़ि दिएक ? दालिमे दोवर नोन धऽ दिएक ? चारि सेर घृत उठा कऽ पीबि जाइ ? आठ टा विवाह कऽ ली ? सोरह टा संतान जन्मा ली ? हो, ई सभ वचन कहऽ-सुनऽ लेल होइ छैक ।

हम—नोतिक वचन थीक जे काल्हि करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब ।

ख०—हौ वैह सभ सनक कहबै छैक । हमरा काल्हि सरवाक अछि त आइए मरि जाइ ? कार्तिकमे पार्वण करवाक अछि त एही मास कऽ ली ? पाँच वर्षक बाद वच्चोक विवाह करवाक अछि से एही शुद्धमे कऽ ली, सायंकाल बाह्यभूमि दिस जाएव से एखने भ आबी ? सभ काजमे अपन बुद्धि लगावक चाही । केवल सिद्धान्तक पाछा आँखि मुनि कऽ चलने सिद्धान्तो भेटब कठिन । खट्टर कका भाँग छानि कऽ दू बुंद उत्सर्ग कैलन्हि आर लोटा अलगा कऽ घट्ट - घट्ट पीबि गेलाह । हम कहलियेन्ह—खट्टर कका, असली बात त बिसरि गेल—भोलबाबाक ओहिठाम अष्टजाम कीर्तन भऽ रहल छैन्ह । चलवैक ?

खट्टर कका बजलाह—हौ ताहि दिन चौर - बाधमे चोर बाधक भयसँ राति भर जागि कीर्तन कैल जाय । एखन दिनमे गामक बीच अष्टजामसँ कोन लाभ ? हम राम-नाममे लागि जाएव ता एम्हर सभ टा लताम तोड़ि कऽ लऽ जाएत ।

हम—खट्टर कका अखंड हवन सेहो भऽ रहल छैक । चारि कंटर घृत आएल छैक ।

खट्टर कका अपन माथ ठोकैत बजलाह—झाय रे बुद्धिमान सभ । हौ जखन दियासलाइ नहि छलैक तखन हमर पुरुखा सभ यत्नपूर्वक अग्निकेँ जीवित रखै छलाह । आव जखन एकटा काठी रगड़ने आगि पजरि जाइत अछि तखन कंटरक कंटर घी खर्च करवाक कोन प्रयोजन ? साँप ससरि कऽ कतहुसँ कतहु चलि गेल आर हम सभ लाठी लऽ कऽ डाँड़ि पीटि रहल छी । युग बदलि गेल, परिस्थिति बदलि गेल परन्तु हम प्राचीन संस्कृतिक नामपर लट्ट भजैत बुझै छी जे धर्मक रक्षा कऽ रहल छी ।

खट्टर कका कुंडी सोंटा लेलनि आर उठि विदा भेलाह ।

पुरान बात

एहि तीस घंटाक भीतर दू प्राणी एहि संसारसँ उठि गेल । दू सहोदर संगहि प्रयाण कैलक । एही तीस घंटाक भीतर एकहि परिवारमे दू सौभाग्यवती विधवा भ' गेलि । तीन गोटा अबोध अनाथ भ' गेल । मुदा तीस घंटा पहिने जे घटना घटित भेल, जे आव पुरान भ' गेल अछि, से थिक चूल्हक फराक करब । वैह चूल्हक फराक करब रमानाथक जान लेलक—दीनानाथक घृणा एही रूपमे व्यक्त भेल छल तीस घंटा पहिने ।

चूल्ह फराक हैब बड़ मामूली घटना । मुदा यैह मामूली घटना न्यों बनल अछि बड़ पैघ-पैघ घटनाक । आइ जे संसारमे संघर्ष अछि, शोषण ओ उत्पीड़न अछि, एक दोसराकेँ दबैबाक प्रवृत्ति अछि तकरा मूलमे यैह पृथक्त्वक भावना अछि । आ यैह पृथक्त्व भावनाक आगि एक दिन सौंसे संसारकेँ सुड्डाह करत ।

मुदा हम भावनामे कियैक बहि रहल छी ? लोटन कक्का जल्दी चून पैवाक आशामे रपटि रहल छथि आ हमर चालि एतेक सुस्त कियैक ? हमरो पान चाही, जर्दा चाही ।

जन्म आ मरण तँ बड़ पुरान बात अछि ।

बात बड़ पुरान अछि । कम - सँ - कम तीस घंटा तँ अवस्से भ' गेल हैतैक । राकेटक एहि युगमे तीस घंटाक समय हजारो - लाखो घटनाक जन्म दै पाछू धकेलि दैत अछि । आ ई बात तँ ततेक मामूली जे तर पड़ि गेल अछि । ककरो ध्यानो नेहँक एहि दिस ।

जीवनक प्रत्येक क्षण अपना गर्भमे अनेको घटना नुकौने अबैछ, जेना सघन अन्धकारमे बिन ज्योतिक भगजोगनी । कखन कोन भगजोगनी कत' भक् द' बहि उठत पहिनेसँ कयो ने जनैए । जखन ओकर भक् - भक् ज्योति अनिश्चित दिशामे निमेष भरिमे झलकि उठैए, हठात् मुंहसँ बहार होइत अछि—हे उएह, हे उएह !

यैह गति होइछ जीवनमे निरन्तर घटित होम' वला घटनावलीक । हम कोनो घटनाक साक्षात्कार कै, ओकरा सर्वथा नवीन बूझि 'आहि !—ओह !—अहा !' कर' लगैत छी आ अपना मोनकेँ परतारैत छी जे 'एहन तँ कहियो

ने देखने छलहुँ' । मुदा से सर्वथा असत्य । कोनो घटना वस्तुतः सर्वथा नवीन नहि होइछ । होइछ पुनरावृत्ति मात्र ! जन्म, मरण, चोरि, हत्या, लूटि शोषण, उत्पीड़न, छलना आदि क्रिया सृष्टिक आदिअहिसँ सनातन रूपमे होइत आवि रहल अछि । हँ, एकरा घटित हैबाक क्रिया भने मनुक्खक स्वभावानुरूप भिन्न-भिन्न होइत हो ।

तेँ ई घटना ने नवे अछि आ ने विशेष महत्त्वपूर्ण । ई बात दोसर जे जाहि परिवारसँ ई घटना सम्बन्ध रखैछ, तकरा हेतु ई अत्यन्त भयावह, अत्यन्त दारुण, अत्यन्त शोकमय !

हम छौ गोटे श्मशानमे बैसल छी—एक गाछक तरमे । ई गाछ अपन प्रान्तमे एकसरे मूड़ी उठौने अछि—प्रतिद्वन्द्विताक भावनासँ एकदम रहित 'भ' 'क' । एहि दिगारक एकाधिपति । जेठक तबधल दुपहरियामे एकमात्र यैह हमरा लोकनिक शरण अछि । अथवा ई कहौ, शरण गहबाक सदाक अभ्यासी हमरा लोकनिकेँ ठकि रहल छी—अपना लोकनिकेँ ई बुझा रहल छी जे हम छाहरिमे छी ।

एहि गाछकेँ गाछ नहि, ठुठ कहौ । जड़ि चारिओ गोटेकेँ भरिसके पाँजमे आवि सकत । डारियो सभ कम मोट नहि । मुदा कलशक कोन कथा, हम एकर पातोकेँ नीक जकाँ गनि सकैत छी । एकर धूआँसँ करिआएल प्रत्येक पातपर अनेक मुर्दाक इतिहास पढ़ि सवैत छी ।

पाछूसँ प्रचण्ड पछवा धूराक भोंकारा द' रहल अछि । पसेनासँ नहाएल तनपर ओ धूरा कादो बनि जाइए । माथक केश भौँ पर जमल धूराकेँ अनेको बेर अंगपोछासँ पोछलो उत्तर हमरा लोकनि भूत बनबास बचि नहि पवैत छी ।

पोछैत-पोछैत मुह आ देह भकभका रहल अछि ।

कट्टा तिनि एक पूष कमलाक धार अछि । धार बहि नहि रहल अछि । ई प्रचण्ड जेठ कमला - जलकेँ सोखि नेने अछि से बात नहि । कमला तँ कैक वर्ष पहिने बलानक कोड़मे समा गेलौह । तथापि एहि कमलामे एहि जेठोमे जल अछि—एकदम स्थिर । भरिसक ई छोटछिन मोइन अछि धारमे ।

जल सड़ि रहल अछि । जलमे जलसँ बेसी सिमार अछि । ठामठाम मोथी आ पटेर हवासे डोलिरहल अछि । सभठाम हरियर-हरियर काइ पसरल

अछि । एकटा नमहर बगुला दुनिनी हर-हर खट-खटसँ एकदम अनासक्त भ' एक चाङ्गर पर जलमे ठाढ़ भ' क' माछक ब्यान्धमे निरत अछि ।

इतक एकदम दखिनवारी कात चारि गोटे महीस सौंसे देह कादो लपेसने, आधा धड़ कदोआयल जलमे डुबौने फोंफिया रहल अछि । धारक ओहि पार धूरा उड़ैत दस बीघा खेतक आओरो आगू, ओहि आमक छोट - छिन गाछीमे, जकर आरिपर भरिसक सभसँ पैघ गम्हारिक गाछ अछि, तीनटा छौंड़ा धरिआ पहिरने टाल-गुल्ली खेलि रहल अछि ।

आ धार आ हमरा लोकनिक बीचमे एक टा चिता धुधुआ रहल अछि । पछवाक प्रचण्डतासँ धूआँ धारक दिस उतरि रहल अछि आ जलपर पसरल काइकेँ छुनि चारूकात छितरा रहल अछि । धधरा पुबारि कातक भूमिकेँ छूविकेँ नाचि उठैत अछि । पछवाक सनसनाइटिक रौद्र - संगीतमे चिताक चिट - चिट वोभत्स ताल द' रहल अछि । सम्पूर्ण वातावरणमे चिराइन गन्ध व्याप्त अछि ।

हम छौ गोटे छी । छौओ गोटे जेठक अत्याचारसँ पीड़ित छी । डेढ़ कोस धरिछावा भरि धूरावला बान्हपर यात्रा । कंसारक बालुसँ उपरौंभमे जीतल ओ धूरा आ ताहि पर तीन मोन मुर्दाक भार । हम, देवेन्द्र भाइ, लोटन कछा आ वूलन—यैइ चारि गोटे मुर्दा ढोनिहार । चारू गोटेक कान्ह फूटि गेल अछि । पसेनाक नोनसँ छुनिना रहल अछि खभक कान्ह । मुदा सभसँ विखिन्न छथि हरे, हुनकर मुह धूआँ सन भेल छन्हि तामसे मुह फुलौने छथि । एहि विकट भूमिक सम्बन्धमे कोनो आक्रोश हुनका मुँहसँ बहार नहि भ' रहल अछि । आ विकले आन्हर छथि जे हुनका जवदस्ती कर्ता कियैक बनौल गेलन्हि ।

छठम अछि जलधरिया । ओ बैलगाड़ीपर खरहो - काठ नेने आयल अछि - मुर्दा डाहवाक हेतु । एहि प्रान्तमे जारनि नहि ने भेटैत छैक । फेर लोक मुर्दा कोना डाहओ । ओ कंसारक बालुसँ बचल आयल अछि, मुदा सभसँ बेसी ओकरे कण्ठ पिपासे जरि रहल छैक । ओकरा आठो आना कैवा चाहो पियास दूर करवाक हेतु । ओ सोलकन्ह अछि, मुर्दा छूअत नहि । तखन एहि रौद्रमे अनेरे कियैक काछड़ि काटओ । ओकरा गंजपरक पसीखाना

हाक द' रहल छैक । मुदा ओकरा के के तैक के ? घरबारी क्यों हो तखन ने ? एक बेचारे जरि रहल छथि, दोसर गोटे निपत्ता ।

चिता धधकि रहल अछि, मृतक जरि रहल अछि आ हमरालोकनि ओहि दिसिसँ अनासक्त भ'क' अपना मे रमल छी । हमरा ने मृतकक चिन्ता अछि, ने चिन्ता अछि ओकर परिवारक—कोना ओ परिवार चेतैक, कोना ओहि जोआन विधवा आ ओकर दूनू कण्टरवा - कण्टरवीक जिनगी चलतैक ! हम एखन सोचि रहल छी—कखन हमरा पान भेटत ! बालू परक ढोंढ़ जकाँ हमर जीह मुहमे कहाँ ससरि रहल अछि ! तारुमे सदल जाइए ई । महा अलच्छ छल ई मुश्नहार । एकरो एही बेरमे मरबाक छलैक !

लोटन कका अपने पर क्रुद्ध छथि । ओ एहन विसराह कियैक छथि जे गामपरसँ विदा हैबाक पहिने चून नहि ल' लेलन्हि । तमाकू अछैत खा नहि सकैत छथि । ई बुलना केहन सोंढ़ अछि ! तमाकू खायत, मुदा राखत किछु नहि । परमुण्डे फलाहार । बूढ़ि नहि तन !...ओ जलधरियासँ चक्कू मडैत छथि, चुनौटी खखोरैत छथि, सुखायल चूनक जोग द' क' तमाकू चुनवैत छथि ।

बूलन सतृष्ण दृष्टिसँ हुनक ओठा - संचालन देखि रहल अछि ।

देवेन्द्र भाइ निफिकर छथि । भाङक अधपइ गोला हुनका निर्विकार बना देने अछि । हुनका लेखे जेहने जरैत मुर्दा तेहने फोंफियाइत महाँस । जेहने धूराक भोंकारा तेहने मोइन मँहक कादो । तैयो हुनक मुह रहि - रहि क' ई शब्द बहार क' दैत छन्हि—'कहू, ई की रे ?'

'अहाँक कप्पार भेलैक !'—लोटन कका अकछेक बजैत छथि, कारण हुनक दृष्टि हरहराक' खसैत जरल आधा जरल आ उधार मृतकपर जाइत छन्हि । ओ अधचुनौले तमाकूकेँ दू चटन लगा पहिने अपना ठोठ तर दाबि लैत छथि आ शेष बुकनी बूलनके कचकचायल स्वरेँ दैत छथिन्ह—'लैह ।' आ बिजाधर उठाक' दू-चारि बेर मृतककेँ खोंचारि दैत छथिन्ह । बूलन हुनक तमाकूक ऋण सधाबक हेतु दोसर बिजाधर उठबैत अछि ।

दूनू गोटे मीलि जारनसँ मृतककेँ भपैत छथि । तीन गोटे नव डगरना आर ऊपरसँ दैत छथिन्ह । कने' काल ओ डगरना धुआँइत अछि, सोंसिआइत अछि आ फेर लहकि उठैत अछि । सौंसे चिता एक बेर फेर नव जोशसँ धधकि उठैत अछि ।

लोटन कका बिजाधर रखैत छथि, डाँड़सँ अंगपोछा फोलि पसेना पोछैत छथि आ गाछ तर अपन स्थान पर आबि बैसि जाइत छथि ।

बलन मृतकक भाइल अवशेष उठा - उठाक चिता पर राखि रहल छथि ।

लोटन कका एक बेर पुनः चिता दिस देखैत छथि आ बजैत छथि—
'एतेक टा लहास कि तुरन्ते जरत ? कम-सँ-कम दू घंटा आर लागत । बाप रे बाप ! ई पछवा, ई रौद ! महा अलच्छ छल ई ।

देवेन्द्र भाइ पुनः अपन सन्त्रोधार करैत छथि—'कहू, ई की भेलैक ?'

सौसे चिताक आगि लोटन ककाक दिमागमे सन्दिग्धता जाइत छन्हि ।
ओ बमकि उठैत छथि—'अहूँकेँ एहिना सद्गति हैत ।'

हठात् हमरा मुहसँ बाहर भ' जाइत अछि--'कका ई अलच्छ नहि, सलच्छ छलाह । एहन मृत्यु सभक होउक । ने कोनो रोग, ने कोनो व्यथा ।'

लोटन ककाक क्रोध हमर बातसँ बढ़ैत नहि छन्हि, प्रत्युत ओ नर्म पड़ि जाइत छथि । ई अजुके गप्प नहि, सदा एहिना होइत आयल अछि । प्रायः हुनका हमरा पर अगाध स्नेह छन्हि तेँ ।

'व्यथा ?'—कका हमरा दिस तकैत कहैत छथि—'बिनु व्यथेँ कयो एना ताड़क गाछ जकाँ अड़ड़ाक' खसैत अछि ? कोनो गाछकेँ खसबामे बिहाड़ि वा ठनका' कोनो ने कोनो कारण त होइते छैक । मुदा जाहि गाछकेँ तरे-तर घुन लागि जाइत छैक से एहिना...'

हुनक दृष्टि लगमे ठाढ़ भेल लोटन पर पड़ि जाइत छन्हि । ओ अगत्या ओकरा पूछि दैत छथिन्ह—'हौ बलन ?'

'सब ठीक छैक कका'—बलन मुमुकाइए ।

'की ठीक है ?'

'दीना भाइकेँ जे 'हार्ट पेस' भेलन्हि से उचिते ।'

'तोरा की बूझल छह ?'

'यैह जे दीना बाबूक खर्च छलन्हि सात सैक मास आ आमदनी छलन्हि डेढ़ सै रुपैया । कोना चलितन्हि ?'

लोटन कका एक बेर डाँड़सँ चुनौटी निकालि फेर खखोड़बाक चेष्टा करैत बजैत छथि—'हौ, सात सै कनी नहि होइत छैक । ई चालि छलन्हि हुनका कोनहुना रमानाथसँ भीटैत रही ।...से ई भिटनाइ ओ बुझलकन्हि । ओ सतर्क भ' गेल ।'

बूलन आपन जानकारी दावा करे कहैत छन्हि—'रमानाथ की सतक भेलाह ? आपसरो भ'क' नोन-तेल आ भात खैलन्हि । घरवालीक लेल नीक जकाँ नुड़ी-सिन्धुर नहि जुवा सकलाह । एकाटा नेना, जे रोटीपर भरी चिन्नी लेल जात भेल रहलन्हि । आ दोसर दिस दीना बाबूकेँ सरापल कचौरीक गन्ध लगैत छलन्हि । माछ - मासु भेलो ताकी । एक्को घरमे दूर राखीति । ई त एक दिन होयनेक छलैक ।'

लोटन कक्का कने' जोशा जाइत छथि—हौ, तोरा उपरे-ऊपर बूझल छह । असल बात थिकैक ई जे डेढ़ सँ रुपैयामे दीना घर चलबैत छलाह । एक सैमे अपन घरवाली आ नेना - भुटकाक खर्च आ पचासमे ओहि तीनू प्राणीक । आ रमानाथक सौंसे दरमाहाक साढ़े तीनियो सै बकसाय नमः ।'

बूलनो गप्पमे कने जोशा जाइत छथि—'एतबे नहि, रमानाथ अपन बाइलीयो आमदनी द' दैत छलथिन्ह । साल भरिक' पावति-तिहार आ कपड़ा-लत्ता सेहो हुनके जिम्मा । कते' सहितथि बेचारे !'

लोटनकक्का एकदम आवेशमे आबि जाइत छथि—हौ, ई वैमन्ना एक नम्बरक धर्कट छल । अपना बहुकेँ सोनासँ छाड़ने आ भाभौ लेल बढिम्मा नूओ नहि । खूब कैलकन्हि थार केँ ! ओकर कमाइ आ मौज करे ई ! आव बूझथु !

बूलनक आवेश कने मन्द पड़लैक—'आप की बुझताह ! आव त सुझाइ भ' रहल छथि ।

मगलसँ जलधरिया टोक दैत छथि—'तः, छोटका गिरहथ त कहियो कहियो पिलाइयो दैत छलन, मुदा ई कहाँ । दिन त सब द मङगनीएँ मे चाहो । मुदा जे कि से, खूब छकौलन छोटकी गिरहथ सभ जोगौलहा एक्के बेरमे पार । गोयां जोरिहन नरी-नरी, खोदा ले जैहन एक्के बेरो ।

दीना-पुराण धलैत रहैत छथि कि देवेन्द्र भाइ अन्तिम बिजाधर कमला धारमे फेंकैत ओतहिसँ हाक दैत छथि—'पचकठिया तैयार छैक जलधरिया ? जल्दी कर ।'

लोटनकक्का अकचका क' देवेन्द्र भाइ दिस तकैत छथि—'ओ, एतेक जल्दी मृतक जरि गेल ?'

‘मृतक जरौ वा नहि जरौ, मुरा जारनि त सभटा जरि गेल ।’ लोटनकका
गर्दी भारैत उठैत छथि । अपन वार्द्धक्यक प्रदर्शन हुनका विवश क’ दैत
छा। ओ लग जा’ मृतकक निरीक्षण करैत छथि । सहसा चून हुनका मोन
पड़ैत छन्हि । बजैत छथि—‘छैक त किछु अधिक भक्ष्य, मुदा जरि जेतैक ।
चलैत चलू ।’

बांचल-खूचल ढगरना बोझल जाइत छथि । करब्याधाय नमः—होइत
अछि ।

हम सोचैत छी, ई दुनियां अथाह अछि आ एहि दुनियाक लोक उपरे-
ऊपर छप-छप क’ रहल अछि । दीना बाबू एखन मुड्डाह भ’ रहल छथि आ
एखनसँ छौ घंटा पहिने हिनकर हाट-फेन भ’ गेल रहन्हि । कियैक हाट-फेन
भेलन्हि तेँ क्यो ने जनैत अछि आ सभ मोने-मन गुड़-चाउर खाइत अछि ।
हम जनैत छी, एखन सँ चौबीस घंटा पहिने हुनका एकटा रमानाथक चिट्ठी
भेटल रहन्हि—टटके लिखल । ओहि चिट्ठीमे ओ लिखने रहथिन्ह जे ‘हम
जनैत छी, अहाँ कम्मो दरमाहा पाबि सुखमे छी, भौजी सुखमे छथि; हम
जनैत छी, अहाँ पन्द्रह हजार कर्जा हमरे उम्मीद पर नेने छी आ कर्जाक
ओहि रुपैयासँ सदा अहाँ सुख किनैत रहलहुँ अछि; हम जनैत छी, हमर
पत्नी वा हमर बच्चा कष्टमे अछि; हम जनैत छी, अहाँ हमर देल गेल चालीस
हजार जमा रुपैयामे सँ एक हजार कर्ज सधा सकैत छी—केवल बाकस खोलबा
मे जतेक देरी लगै—मुदा हमरा एहि सभसँ कनेको दुःख नहि अछि । अहाँ
जेठ भाइ छी, पिता तुल्य छी । अहाँ सदा सुखी रहो सैह हम सोचलहुँ, सैह
हम कैलहुँ । एखनो अहाँ सुखी रही से हमर कामना अछि । मुदा अहाँ हमरा
सँ घृणा करो से हमरा सह्य नहि । हम सदा अहाँसँ स्नेह पैबाक इच्छुक
रहलहुँ, मुदा अहाँ स्नेह देखौलहुँ एहि रूपक जे हमरा आत्महत्याक हेतु विवश
कैलक । हम जा रहल छी । किछुए घंटाक बाद अहाँ सुनब—रमानाथ एहि
संसारसँ उठि गेल ।’

केवल हमही टा जनैत छी—हमही पहिल समाद देलिअन्हि दीनाबाबूकेँ
रमानाथक रेलमे कटि मरबाक आ हमही हुनक हृदय-गति बन्द भेला पर
हुनक हृदयक स्पन्दन निरीक्षण करैत काल हुनका जेबीमे रमानाथक पत्र
पौलहुँ । हमही जनैत छी जे दीना बाबूकेँ कोन प्रकारक धक्का लगलन्हि ।

एखन दीना बाबूक अवशेष जरि रहल छन्हि । एखने रमानाथक मृत शरीरक पोस्ट मार्टम भ रहल हेतन्हि । ओहो आइए जरि क' सुझाह हेताह ।

दीनानाथक पत्नी एखने अनुभव करैत होइतीह जे हुनके लगौल आगि हुनके सौभाग्यकेँ सुझाह केलकन्हि । ओ आब जनते होइतीह जे हुनकर देयादिनी जे किछु घंटा पहिने विधवा भेलथिन्ह से हुनके कृत्य थिकन्हि ।

एहि तीस घंटाक भीतर दू प्राणी एहि संसारस उठि गेल । दू सहोदर संगहि प्रयाण कैलक । एही तीस घंटाक भीतर एकहि परिवारमे दू सौभाग्यवती विधवा भ' गेलि । तीन गोट अबोध अनाथ भ गेल ।

मुदा तीस घंटा पहिने जे घटना घटित भेल, जे आब पुरान भ' गेल अछि, से थिक चूल्हिक फराक करब । वैह चूल्हिक फराक करब रमानाथक जान लेलक—दीनानाथक घृणा एही रूपमे व्यक्त भेल छल । तीस घंटा पहिने ।

चूल्हिक फराक हैब बड़ साधारण घटना । मुदा यैह साधारण घटना न्यौ बनल अछि बड़ पैघ-पैघ घटनाक । आइ जे संसारमे संघर्ष अछि, शोषण ओ उत्पीड़न अछि, एक दोसराकेँ दबैबाक प्रवृत्ति अछि तकरा मूलमे यैह पृथक्त्वक भावना अछि आ यैह पृथक्त्व भावनाक आगि एक दिन सौंसे संसारकेँ सुझाह करत ।

मुदा हम भावनामे कियैक बहि रहल छी ओहो टोटनकका जल्दी चून पैबाक आशामे रपटि रहल छथि आ हमर चालि एतेक कियैक ? हमरो पान चाही, जर्दा चाही ।

जन्म आ मरण तँ बड़ पुरान बात अछि !

द्वितीय

अ० भा० मैथिली साहित्य सम्मेलन

निमित्त

आइये ५) टाका पठाए पूर्ण सदस्य बनू ।

पता : मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

दूनु छोर

‘से सांचे, समाजक निचला छोर काहि देखलौह आ उपरका छोर आइ देखल । दूनु छोर आश्चर्यजनक रूपेँ एके रंग अछि । मैथुन आ आहार यन्त्र मात्र । केवल रूपक अन्तर छैक । आह केहन भीषण चक्र अछि, टाका लै शृंगार आ शृंगार लै टाका ।’ कोसा व्यथित स्वरेँ उत्तर देलथिन्ह ।

‘समाजक दूनु छोर एक्के रंग छैक ।’ रहि-रहि कै हुनका मोनमे ई बात चक भाउर छैन्ह ।

निम्न मध्य वर्गक ‘कोसा’ । शिक्षा आ सौन्दर्यक शिखर पर बैसलि ‘कोसा’ । ओ अपन लावण्य आ प्रतिभाक बलपर अइ घरमे आवि गेल छली । हुनका सौभाग्यक की कतौ अन्त छलैन्ह । हुनका जखन - तखन लागैन्ह जेना ओ सिम्बरक नवका रूइ जकाँ, धरती आ आकास, स्वप्न ओ सत्य तथा जीवन आ यौवनक बीच भसियैल फिरैत होथि । होनि जेना एते आदर, एते स्नेह आ एते समंगकै अन्तरक कोन, कोनमे सरियाकै राखी ।

हुनक ओइ पहाड़ी नगर, बरिसात बड़ सोहनगर । चारुभरक पहाड़ी सब हरियर साड़ी तहाँ के हुनके जकाँ नव-वधू बनि गेल छलैक । कोयलाक खान सबमे पहुँचावाला डोंगा सब, विद्युत तारपर द कै आकाशमे उधियैत जकाँ लागइ । पीटक कारी - कारी सड़क, ऐं चैत दिन-राति कारी नागिन जकाँ वोन दिस बिलायल जाति बूझि पड़इ ।

पार्कमे, पतिक पार्श्वमे बैसलि हुनका लागलैन्ह जे ओ अजन्ताक चित्रक उड़ैत यक्ष-यक्षिणी जकाँ सुखक अनन्त - नीलमे उड़लि जा रहल होथि । हुनका मोन पड़लैन्ह जे कोना ओ विश्वविद्यालय भरिमे सर्वप्रथम होति परोक्षोत्तीर्ण भेली । कोना अपना क्लासमे चारि वर्षसँ लगातार फेल करइबला असीम धैर्यशाली आ लक्ष्मीक दुलरुआ निशानाथसँ हुनका भेंट भेलैन्ह आ कोना ओ निशानाथक आकर्षणमे एली आ पुनः वैवाहिक बन्धनमे बन्धि गेलि ।

से एकटा सम्पन्न कोयलाक खानक मालिकक बेचिपुल
 ऐश्वर्यक भोगेन्द्र निशानाथ, अपना पुरक पुरेन्द्र निशानाथ, केहेन - केहेन
 तपस्वी छफसरक क्षण घड़ीमे तप भंग करा देनिहार निशानाथ आ सफल
 व्यवसाय संचालक निशानाथ आ कनिये दिन ओ वयसमे चारुकात आ न
 व्यक्तित्वक प्रताप पसारनिहार निशानाथ हुनका बूझि पड़थिन्ह जेना ओ
 हुनक स्वयंके क्षितिज परक इन्द्रधनुष होथि ।

ओइ दिन खानक बोनिहार सब कै साप्ताहिक बोनि भेटल छलैक । साफ
 चक - चक बोनिहार । छवि छटोवाली बोनिहारिन । अधिकांसक मदिरासँ
 अरुणा भ गेल आंखि ।

कोसाकै पार्कमे छिरियैल ओ सब बड़ सोहावन लागलैन्ह । निशानाथ
 बैसल सिगरेट धुकैत रहलाह आ कोसा एम्हर-ओम्हर टहलि कै ओकरा सबसँ
 बहुत अधिक उच्च स्तरक हो कि आनन्द अनुभव करै लागलीह ।

एतवइमे एलइ एकटा नवयौवना । उदाम डेग । उताहुल आंखि । ओ
 जेना ककरौ ताकैत चलइ । बूझि पड़इ जेना ओ भदवारी सरिता हो जे कोनो
 नदक कोरामे ओलरि जाइ लेल आकुल भ रहलि हो ।

कोसाक अधरपर मुसकी आबि गेलैन्ह । ओ निशानाथकै चुटकी कटैत
 कहलथिन्ह—रोमांसक रंग देखैक हो त ओइ फूल - गाछक अड़मे चलू ।
 ओइ नवकीक आंखि आइ किछु कहैत छैक जेना ।

दूनु गोटे अड़ भ गेलाह । ओ नव - यौवन एकटा मयूर - पंखीक पात
 तोड़िकै अपना जूड़ामे खोंसि लेलक ।

अहां कल्पना करू तँ एकर प्रणयी केहेन हेतै ? कोसा निशानाथकेँ
 पुछलथिन्ह ।

निशानाथ मुकुरेलाह—अहां कहियौ तँ ?

कोसा बजलीह—मांसल शरीर । जवानीक नवका रक्त गालपर रंग
 पसारने । उठैत पम्ह । कुनल पाथर सन भुजदंड । डेगमे पौरुष । आंखिमे
 मस्ती । से अबैत हेतइ एकर राजा । बाट तकइ छथिन्ह रामी ।

एतवइमे ओकर राजा सांचे आबि गेलथिन्ह, नवीना दौड़लि । राजा
 एम्हर-ओम्हर ताकि कै ओकरा संग नेने, अर्ध - आलिंगन करैत जकाँ एक
 दिस चलि पड़लाह । एम्हर कोसा उदास भ गेलीह ।

राजा धन-वयसू । दाँत झड़ल जकाँ । पान खेल
हुनक मुँह तेना बूझि पड़इ जेना मालाक आघातसँ कोनो भैसाक पोतपर
शेरे रक्त लेभरि ऐल हो । करजनी सन - सन शिकारी आँखि । पिचल नाक
हुनका मुखमंडल कै आर घिनाइ बना देने छलैन्ह ।

निशानाथ हँसि पड़लाह आ हँसिते गेलाह—ई तँ अपने खानक कुलीक
सरदार थीक । बेस लहटगरि कै बमौलक अछि अइ बेर ।

कोसा कै तामसै जेना फुकि देलकैन्ह—बमौलक अछि तकर अर्थ जे ई
ओकर पत्नी नहि छियैक । छुच्छी ओकरा कोन गुनपर लहालोडि अछि ।

कोन गुन ? विद्रूपक हँसी हँसि उठलाह निशानाथ—एकर आ एकरा
पति कै कम काम, बेसी दाम, अवेर सबेर अबइ जाकि आ कत्ते प्रकारक
अनुचित सुविधा भेटौतकर लोभ । भ सकैत अछि जे एकर पतित पतिये एकरा
अपनासँ उपरका कै प्रभावित करै लेल पठौने होइ । कहियो - कहियो किछु
उपहार आ सिंगार पटार लै दू चारि टाकाक प्राप्ति । ओही गुण सबपर
लहालोडि हैत ।

टाका लै सिंगार आ सिंगार लै टाका । ओह कते भीषण चक्र
अछि । कहलथिन्ह कोसा । हुनका मनमे कोनो अज्ञात किनाइनक स्वाद
सन किछु सर्वाङ्ग कै सिहरा दइ वला पसरै लागलैन्ह ।

समाजक ई छोर एहने अछि । एकरा सब लेल परिवार की ? सामाजिक
बन्धन की ? नैतिक की ? मानवीय माधुर्य की ? भूख-प्यास चालित
पशुवत जीवन छैक । एकरा सबलेल जीवनक आनन्दक अन्तिम परिणिति
थिकइ नाह आ मदिरा यौवन छैक तेँ अनकर टाका पाबइ लै ओकर उप-
योग छैक आ टाका छैक तेँ अनकर यौवन पाबइ लै ओकर उपभोग छैक ।
मैथुन आहार यन्त्र मात्र थीक ई सब । भाषण जकाँ यान्त्रिक रूपेँ कहैत
गेलाह निशानाथ—राति बीतैत - बीतैत राजा कतौ नालामे ओंघड़ैल पौल
जेथिन्ह आ रानी कोनो आनक कोरामे ओंघाति रहथिन्ह ।

कोसाक मोनक किनाइनक स्वाद आव जेना हुनका माथकै घुमबै
लागलैन्ह ।

चलू आव चली । ओ कहलथिन्ह ।

गुस्सुरा उठला निशानाथ—जो विश्वविद्यालय बहुत
कलास वांकिये अछि, प्रिये ।

ओ सब कार दिस बढ़लाह ।

हुनकर नां छलैन्ह अलका । यत्तक राजधानी अलके सन लक दूध आ
जगमग करैत रहैत छली ओ मुदा यौवनक कोशी बाढ़ि चल गेलसँ ओ
चारु कात ढहल दनमनैल कूल कगार वाली नदी जेकाँ लागैथ । से विगत
होति जीवन वसन्तक क्षति - पूर्ति ओ, सोना, माणिक, चोटगर वस्त्र, विगत
गाथा आ व्यंग भरलवाणी सै करैथ ।

से ओइ दिन ओइ घरमे बड़ उमक-धुमक छलैक । सन्ध्या कालक विशेष
आयोजन लेल सब उद्विग्नतापूर्वक प्रस्तुत भ रहल छलाह ।

से भोरुका हिना क, कने मधुर आ कने वासि गन्ध जकाँ कोसाक कक्षमे
आबि गेलथिन्ह हुनकर जेठकी दियादनी अलका ।

कोसा हुनक अभ्यर्थना केलथिन्ह । किछु व्यंगक आतंकसँ । किछु
हुनका अहांगक प्रति शरबनी उपेक्षासँ ।

निशा बड़ कटगर गप्प कहइ छलाह अहां दै । ओ हँसिते गेलीह—
काल्हि पार्कमे, खानक कुलीक जमादारक पार्श्वमे एकटा...देखि कै अहांक
जी फरियै लागल ।

कोसा मुस्कुरेली—नाथ वेस कहलैन्ह । समाजक ओ छोर ओहने होइत
छैक ।

अलकाक हँसी थम्हि गेलैन्ह—ओ निचला निचला छोर भेल आ अहाँ
तँ सबसँ उपरका छोरपर छी । एकर हाल तँ नइ कहब ।

हम तँ ऐले छी । कोसा गम्भीर भै एली—हमरासँ बेसी यैह कहथिन्ह ।

बड़ बुधियारीसँ अलका बात घुमा देलन्हि—एह आइ तँ अहीक दिन
थीक । तँ ने ई लाली छिटकि रहल अछि अहाँक मुँहपर । अजुका उद्यान-
भोजमे अहाँ बाजी मारब तइमे की कोनो सन्देह ? देखी काज कोना
निबाहैत छी ?

काज कोन ? खाउ खेलौ आ चल आउ । सरल भावें कोसा कहलथिन्ह ।
पढ़ लिखू आ फस्ट करू । एतबै बातसँ ई तिनतला भवन नहि ठाढ़ भ
गेल छैक आ ने अप्सरासनक वस्त्र-भूषण आबि जाति छैक, रानी । एकर

निमहताम् । गत वैश्वानरं खान दुर्घटना भेलैक तकर जाँच
एलैक अछि । तही पुरुषक सम्मानमे ई उद्यान-भोज थिकैक । ओ जेना प्रभा-
वित हैत तही पर लाखक घटी आ वचति निर्भर करैत अछि । अलका
बजल ।

कोसा कने ऐंच गेली मुदा धैर्यक संग कहलथिन्ह—ई तँ रहबे करथिन्ह ।
अधिक उदास होति अलकाक उत्तर छल—हरि विनु को पुरिहें मेरो
स्वारथ । जखन शरीरसँ जवानीक हरि चल गेलाह तँ मनक पार्थ कै लाख
कामचाक तीर छोड़नहि की हेतैन्ह ।

हुनकर कृत्रिम हँसी टेबुल - कुर्सीसँ हमरा टकरा घुरि ऐल ।

एला निशानाथ सजल-धजल । अस्त-व्यस्त । चलइ चलू । टाइम भ
गेल । गेस्टसँ किछु पहिनहि पहुँचनाइ उचित ।

हम रहब घरइमे—अलका हँसलीह—सबटा रौल अहीं दूनू चेकतिक ।

कोसा आ निशा आवि कै कारपर बैसलाह आ क्षण-घड़ीमे उत्सव
स्थलपर जुमि गेलाह ।

कोसा कै बुझि पड़लैन्ह जेना इन्द्रासन सजल हो । एहेन इन्द्रासन जइमे
सबमे पुरुष एकहक टा इन्द्र हो । आ सब नारी अपना-अपना पुरुषक तेँ
इन्द्राणी हो मुदा आन पुरुष लै रम्भा ओ मेनका । सब जेना कोनो रौल
निवाहइ लेल तन-तन करैत हो ।

ओ सम्हरि गेली । पारस्यक अभिवादन भेल । हुनक दृष्टि श्रीमती मैनी
पर विशेष रूपेँ अटकलैन्ह । मैनी तेना फराटासँ अंग्रेजी बजैथ जे बूझि पड़इ
जेना दूरपर तन्त्रियाक तासा गड़गड़ा रहल हो । मोने-मोन सब कै अपनाकेँ
वेस्ट देखबैक प्रतिद्वन्द्विता चित्रि पड़लैक ।

आ तखनहि ऐला गेस्ट । मधुक वर्षाक बीच पुष्पक सुगन्धिक बीच ।
शिकारीक आँखिक बीच आ अभ्यर्थनाक झुड़ीक बीच ।

परिचय भेल । भोजक संग किछु हल्लुक सांस्कृतिक कार्यक्रम सेहो
छलैक । तानपूरा उठोलन्हि कोसा । थेइ - थेइ भ गेल । कंग्राचुलेसनसँ
निशानाथ दवि जकाँ गेलाह । गेस्ट हुनका हार्दिक हुलासक बीच कोसासँ
बात करैमे तन्मय भ गेलाह ।

सुटकि गेली मैनी । चटकि गेल अनका सबदिक रंग । कोसा कनखिये-
कनखिये तकलैन्ह तेँ मैनी निशानाथक संग ओहिना नोन-लस्सा भू रहल
छली जेना गेस्ट हुनका संग लस्सा-नोन । कोसा अगुतेली, कछमछेली आ
उकस-पाकस कैलन्हि मुदा जेना जानि कै हुनका नाथ हुनका ओइ ठाँ सँ
मुक्त करबाक हेतु नहि आवि रहल छथिन्ह ।

भोज समाप्त भेल । भाषण समाप्त भेल । किन्तु गेस्टक गप्पक
अन्ते ने छल ।

बिदा कालसे निशा आवि कै कोसाक कान लग कहलथिन्ह—अहाँ गेस्ट
कै पहुँचा आवियौन्ह । अपनइ कार ड्राइव करव । हम 'मैनी' कै पहुँचा
अबैत छिएक । वेचारी एकसरिये अछि ।

लुत्ती लागि गेलैन्ह जेना कोसाक मनमे । के कहै, गेस्ट कै ड्राइव कै
हुनका सरकिट हाउस पहुँचाबैक बातेँ, कि नाथ कै मैनी कै द आवैक बातेँ ।
कि दूनू बातेँ ।

‘हमरा साथमे टनक उठि गेल अछि । हमरा अहीँ पहुँचा दिअ ।’
ओ वजलीह । साँचे हुनक साथ घुमि रहल छलैन्ह ।

‘सब चौपट कैल । ओहि गेस्ट कै अहाँसँ गप्प करैमे कत्ते आनन्द आवि
रहल छलैन्ह । बस काज बनले जेकाँ बुझू । एक रत्ती आर गपशप कै ऐब
तेँ की हर्ज ?’ निशा क्रोध कै विनय आ प्रेमसँ आवि कै कहलथिन्ह ।

‘नाथ, हमरा जाय दिअ ।’ कननमुँह भेलि आ उत्सवक विजेता
कोसा वजलीह ।

‘एखन किएक ने साथ टनकत ।’ क्रोधेँ कँसत फुसफुसेला निशानाथ—
इन्द्राणीक हास-विलास आ कुवेरक ऐश्वर्यक उपभोगक बेर तँ सरोवरक माछ
जेकाँ चुभचुभ करै छी । किन्तु.....

गेस्ट, आब दलक दल लोकक अरियातक बीच जा रहल छलाह । हुनक
आँखि एक बेर दू बेर कोसा लै तकलकैन्ह । कोसा कै बूझि पड़लैन्ह जेना
ओ महा-गेस्ट खानक कुली-जमादारक साक्षाते पितियौत हो । वैह शिकारी
सन छोट-छोट आँखि, ओहने पिचल नाक आ ओहने वासनामय मुद्रा ।
अन्तर केवल पद मद आ रंगक छलैन्ह । कोसाक अंग-अंग जेना सिंहगि गेलैन्ह ।

निशानाथ मटक के मैनीक कानमे किछु कहलथिन्ह । मैनी इजोरिया राति कुमुदिनी जेकाँ विहुँसि उठलीह आ निशानाथक संग लपकि के गेस्टक संग ध लेलनिह । पुनः गपशप आ ठहाका गूँजैत रहल ।

बाहर आबि के कोसा धहधह जरैत आँखिये देखलैन्ह जे श्रीमती मैनी, निशानाथ, आ गेस्ट एक्के गाड़ीमे बैसलाह । ड्राइव करै लगलीह मैनी ।

घर घुरि ऐली कोसा । डुबल-डुबल सन क्रममे । समाचार बुझलैन्ह 'अलका' । हुनका आनन्द भेलैन्ह कोसाक पराजयसँ । जोभ भेलैन्ह काज गड़बड़बाक आशंकासँ ।

जोभे व्यंग बजली अलका—बड़ स्वाभाविक गप्प भेल । हमर ई अनुमाने छल । अहाँ जइ वर्गक थिकौह से ई सब कहिया देखवैक ।

भे साँचे, समाजक निचला छोर देखलौह आ उपरका छोर आइ देखल । दूनू छोर आश्चर्यजनक रूपेँ एक्के रंग अछि । मैथुन आ आहार यन्त्र मात्र । केवल रूपक अन्तर छैक । आह केहन भीषण चक्र अछि, टाका लै शृंगार आ शृंगार लै टाका । कोसा व्यथित स्वरेँ उत्तर देलथिन्ह ।

अलका सौन रहि गेली । की उत्तर देथुन्ह से फुरवे ने करैन्ह । दूनू इजोरिया राति दिस तकैत रहि गेलीह ।

अहर बीतल । पहर बीतल । निशानाथ नई घुरलाह । 'की ओहो खानक जमादारे जेकाँ मैनी संग कोनो पार्कमे हेताह ? वा मैनीकेँ गेस्टसँ गप्प करवा लेल छोड़ि अपने कतौ अन्ते गेल हेताह ?' सहस्र आशंकासँ कोसा व्यथित भै उठलीह ।

फोनक घंटी टनटनैल ।

अलका चीन उठलनिह ! ना ठेकान कहि के कयो सूचित के रहल छलाह—'निशानाथ, निसामे बुत्त भेल सड़क कातमे बेहोश छथि । कार पठा के मँगवा लियौन्ह ।'

अकुलैलि कोसा उठलीह ।

अपनइ की जैव ? कूदि के अलका कहलथिन्ह—कोनो एक्के दिनक बात छिएक । ड्राइवर के कार ल के पठा दियौक ।

ड्राइवर के बजा के आज्ञा भेटलैक ओ चल गेल ।

मूर्तिवत् रहि गेली कोसा ।

'समाजक दूनू छोर एक्के रंग छैक ।' रहि-रहि के हुनका मोनमे ई बात चक भाउर दैन्ह ।

कवि-प्रिया

देखल, कामिनी नारीत्वकेँ पराकाष्ठा परकेँ राखि देल । अकस्मात् ह्म जालमे बभल माछ जकाँ कामिनीक बाँह-पाशमे छटपटा रहल छलहुँ । अन्तमे हम अन्तिम अस्त्रक प्रयोग कए कहल—कामिनी ! भारतीय नारीक सतीत्वपर आस्था राखू...आब अहाँक सिन्दूरे कविता थीक ।

—हीरा बाबू ! हम कामिनी नहि, कलियुगक कुन्ती छी ।

—कलियुगक कुन्ती ! अर्थात् ?

माननी, प्रणय प्रगल्भा कामिनी हमर छातीपर माथ राखि कहल—
कोनो नारीक सन्तान - लोभ अहाँ कोना बुझबइ...आ से मास्टर
साहेबसँ असम्भव...हम मास्टर साहेबक आज्ञा पावि अहाँसँ याचना...।

अतुलनीय कलाकार चेखोवक प्रसिद्ध - कथा 'डार्लिङ्ग' पढ़लाक बाद लेव तोलस्तोयक एहन धारणासँ मोन अनायासे सहमत भ' गेल ।...चेखोवक रचनाक गुण ई जे ओ बोधगम्य आ भावनाक निकट अछि, मात्र प्रत्येक रूसी-ए क लेल नहि, अपितु, प्रत्येक मानवक लेल...।

—बाबू ! मलिकाइन चाह पीबइ लए बजबइ छइथ । सुन्दर कहिकेँ चल गेल । मोन भेल सुन्दरकेँ सोरक'केँ पुछिओइ—सुन्दर ! तोहर मलिकाइन आखिर की चाहइ छथि ? तोरा किछो बुझै छ ? मुदा, किछु कएल नहि; बूझल, बजबइ छथि सुन्दरक मलिकाइन, कामिनी, हमर परो-
सिन, सकलदेव बाबू मास्टर साहेबक स्त्री...। आ ऊठि हुनक 'ड्राइंग-रूम' पहुँचि गेलहुँ । चाहक सङ्ग गप्पक जाल कामिनी छनहिमे पसारि देल । हमर अविवाहित जीवनपर आलोचना...हमर अपन परिवारसँ उदासीनतापर आलोचना...अव्यवस्थित रूपेँ एना भसिआएव पर आलोचना...हमर आर्थिक दुर्व्यवस्था पर आलोचना...हमर सामाजिक घोर विरोधक भावना पर आलोचना...आ, एहिना अनेक प्रकारक आलोचना-प्रत्यालोचनाक पश्चात् अंतमे प्रश्न कएल—हीरा बाबू ! ई तँ कहू जे अहाँ एहन नीरस जीवन किए विता रहल छी ?

मीन त... तइयो उत्तर... अनि—दामा करव ! हमर जीवन नीरस आ कठोर एहि कारणेँ अछि हम कलाकार छी, एक विचित्र व्यक्ति । जीवक आरम्भहिसँ हम द्वेषी, अपनासँ असंतुष्ट आ अपन काजक प्रति संदिग्ध-रहइ छी । हम सर्वदा गरीब छी ।...सबइ एक घुमकड़ी जीवन पसिन्द करइ छी ।

—मुदा, एहि घुमकड़ी-प्रवृत्तिसँ अहाँक कलाकेँ कोन सामञ्जस्य, हीरा बावू ?

कप राखि जेबमे सिकरेटक कारण हाथ देल तँ कहलनि—हम अहाँ लए पान लगाकेँ रखने छी...आ हे ! सिकरेट जनु पिबी । पान खाइत कह-लिअनि—पानमे बहु भंभट भ' जाइए—पान राखू, चून् राखू, खपर राखू, जरदा राखू तएँ विवश भ' क' सिकरेट पीबइ छी....एकसरुआ जीव ने भेलउँ...। कनेक विचारि जरदा तरहथीपर राखि—एकटा बात वृफल; एहि मानव-जीवनक उद्देश्य भेल ज्ञान-अर्जन आ ज्ञान-वितरण...आब जेना हो से...एहिमे खूब प्रगल्भतासँ 'विष' आ 'विषया'केँ अंगीकार करइ छी...। भ्रमणशीलतासँ जीवनक रहस्य बुझइक प्रयासमे छी । आ जरदा फौँकि लेल ।

—हँ, संघर्षपूर्ण रहस्यमय जीवने तँ जीवन थीक...रहस्य समाप्त जीवन समाप्त...एहि मानव - जीवनक इतिहासमे केहन - केहन रहस्य अछि । स्त्री-पुरुषक चिरंतन संघर्ष...अतृप्त वासनाक संघर्ष...मानव-जीवनमे कतेक उत्तर-दायी अछि...।

देखल—एक अद्भुत ते स्त्री, वाक्प्रगल्भा, शिचिता, भरल-पुरल गोल-गोल गोर - गोर बाँहि वाली, कमलमुखी, कामिनीक मूँह उदास भ' गेल । हम मूढ़ भेल सन बजलउँ एहन चलइ छी ।

तावत् मास्टर साहेब कोठली प्रवेश क' हमरा देखितहि अति प्रसन्न भ' स्त्रीसँ कहल—एक्सेप्ट माइ हर्टिस्ट कौप्रेचुलेशन ।

—थांग्स फौर योर काइन्ड कन्सिडरेशन । कामिनी उत्तर देल, मुदा, हम एहि वार्तालापक किच्छु अर्थ नहि बुझलियइक, आ, मास्टर साहेब हमरा कहल—चलइ किए छी ? हम आवि गेलउँ तएँ की ??

—नहँ, नहँ, आव अपनउँ सुभ्यस्त होउ ।

गत पन्द्रहे दिनमे भारतक प्राचीन ऐतिहासिक नगर मंदिर आ भग्नाव-
शेषसँ भरल - पुरल गयाकेँ धूनि देने रही । शहर महा-रही तखन, रेलवे
स्टेशन आ बेश्यालय गृहादि नीक । आरा - गयाक गुण्डा विश्वीदते ।
व्यभिचार, अत्याचार, अनाचार, कदाचार आ चोर घोर गरम बजार...।

सन्ध्याकाल मास्टर साहेब कामिनी आ हम विदा भेलँ टहलए । पहिने
दिष्णी टैंक आ पार्क-द्वय आ श्रीकृष्ण रोड ध' गौतम बुद्ध रोड धएल, बीच
बजार दने कोतवालीक काते-कात जाइत आजाद पार्कमे जाकेँ बइसि गप्प
करए लागि गेलँ आ ओतइ गप्पक क्रममे मास्टर साहेबकेँ कहलिअनि—
मास्टर साहेब ! हम आव एही बीचमे गया छोड़ि रहल छी; एतए मोन नहि
लगइए ।

—अरे, मोन एना लागत ? शहरसँ बाहर जाउ—घूमि फीरि आउ !
एक दिन ब्रह्मयोनि पहाड़ परसँ भ' आऊ । बोध-गया देखि आऊ राजगिरिसँ
दू-चारि दिन बिताउ.....आ कामिनी दिस संकेत करइत—कामिनी !
हीरा बाबूकेँ घुमवा-फिरवाक आग्रह नहि करइ छिअनि ?

आ, अंतमे बड्ड घोड़ाउजक उपरांत निश्चय भेल जे काल्ह कामिनी आ
हम भिनसरुका 'बस' सँ बोध-गया जाए ।

भिनसर सुतले छलँ तँ बोध भेल जे कोनो कोमल शीतल हल्लुक हाथ
पाँखुरपर अछि आ मधुर शब्दें केओ उठा रहल । आँखि फोलि देखल जे
कामिनी; विहुँसइत, हाथमे चाह नेने ठाढ़ि आ कहलिअनि—छओ बाजि गेलइ
...साते वजे बस फुजइ छइ । चाह पीवू आ हे ! इएह पान-जरदा अछि,
जल्दी तइआर भ' जाउ ।

हम स्नानादिसँ निवृत्त भ' 'शूट' पहिरवाक उपक्रममे छलँ तावत्
कामिनिकेँ सिन्धी नारीक वेषमे तइआरि उपस्थिति देखि अनायासे मद्रासी
धोती आ कोट पहिरि, सिकरेट - केश आ 'लाइटर' लए टेबुलपर भुकलँ
तँ पनबट्टी देखबइत कहलिअनि—सिकरेट लेबाक जरूरत नहि, हम अहाँ लए
पान ल' लेलए ।

आ, हुनक सङ्ग बोध - गया जा सर्वप्रथम प्रधान बुद्ध - मंदिर तखन
ओकर चतुर्दिक । तखन, तिब्बतियन महायान मंदिर, तिब्बतियन धर्मशाला,

महाबोधि—चाना बुद्ध मंदिर ओतए श्रद्धाञ्जलि - पुष्पांजलि देल, चीनी धर्म-
शाला, बुद्ध-पुरातत्व विभाग, वर्मा आगतालय, तखन विरला-धर्मशाला,
कुंरु मन्दिर, अशोक - चंद्रगुप्त क चित्रांकन तेकर बाद वाग्देवी, वज्रशिला,
बगनाथ मंदिर, राममंदिर आ तखन नीरंजना नदीक ओइ कात जतए
सुजाता बुद्धदेवकेँ खीर खुओलकनि...सभटा देखि रातिमे घूरि अएलउँ ।
तेकर चारिदिनक बाद ब्रह्मयोनिक चारि सओ चालीस सीढ़ी गनि अएलउँ...
मंगला - गौरी सती मंदिर देखि अएलउँ । विष्णु - पद बराबरि जाइ । आव
एक दिन राजगिरि जाएब ई निआर रहल ।

एवं क्रमे आर पन्द्रह दिन वेस जकाँ बीतल ।

आ, एक दिन मास्टर साहेब दू-चारि दिनक लेल पटना चलि गेलाह ।
ओकर प्रात हुपहरिआमे हम घोर निद्रामे रही । हठात् नीन दूटल । देखल
कामिनी हमर छातीपर माथ देने, दुनू हाथें हमर कन्हा घेने, आत्म-
समर्पण कएने, कनइत । हमर वामा हाथ हुनक पीठ पर आ दहिना हाथ
हुनक सघन बाल-जालमे समाएल । हम चहुँकि चिचिआ उठलहुँ—कामिनी !!

हीरा !! आर जोर सँ दाबि हिचुरए लगलीह ।

कामिनी ! ई की ? की चाहइ छी ?? उठु, ई नीक नहि... आखिर हम ...।
बलात्सँ उठा हम कुरसी पर बइसि रहलहुँ ।

आ, कामिनी आँचर^{की} नोर पोछइत भारी स्वरमे कहए लगलीह—
हीरा बाबू ! हमर^{की} बूझल अछि, अहाँ सन लोकक हृदय जँ वज्रसँ वेसी कठोर
अछि तँ फूलसँ वेसी कोमल । अहाँ अपनाकेँ चिन्हू ।...जखन हम मगध
महिला कओलेजमे पढ़इत रही, मास्टर साहेबसँ विआह भेल आ तहिआसँ
हिनक सङ्ग छी...हमरा जीवनक आरम्भहिसँ विश्व-साहित्यक अध्ययन कर-
वाक अवसर भेटल—क्रमशः वाल्मीकि, व्यास आ कालिदास, शेक्सपियर,
गेटे, दाँते, विक्टर ह्यूगो आ एमिल जोला, टालस्टाय आ चेखोव आदिक
साहित्यसँ अवगत भ गेलहुँ जेकर फल भेल जे साहित्यिकक व्यक्तिगत जीवनसँ
प्रेम भ' गेल आ हमरा कोनो कविक प्रेरणा-भूमि होएवाक इच्छा भेल,
किन्तु... ।

—किन्तु समाजक बजरगीरहमे छी, सएह ने ?

धर्म-
ला,
ला,
तए
।
...
व

—हँ, समाजक निर्माण तीन-दो मानव - जीव... समुचित
समाधान थीक । स्त्री-पुरुषक नैसर्गिक आकर्षण संतान लिप्सा आ सुरसा...।
—एहिमे अहाँकेँ अपन परिवारसँ संतुष्ट रहबाक थीक—एना भा...
क वेगमे भसिआ लौकिक पारलौकिक...। कहइत हम ऊठि ठाढ़ भ' गेलहुँ,
आ, कामिनी ऊठि आँखिमे आँखि पइसा अनुनय कएल—हमर भिक्षा पर
धेआन दिअऽ। कोनो कविक कन्या नहि भ' सकलहुँ आ ने पत्नी । हमर
चिन्त्य-स्वरूप केँ एना किए अवहेलना करइ छी...?

देखल, कामिनी नारीत्वकेँ पराकाष्ठा परकेँ राखि देल । अकस्मात् हम
जालमे बभल माछ जकाँ कामिनीक बाँहु-पाशमे छटपटा रहल छलहुँ । अंत
मे हम अन्तिम अस्त्रक प्रयोग कए कहल—कामिनी ! भारतीय नारीक सतीत्व
पर आस्था राखू...आब अहाँक सिन्दूरे कविता थीक ।

—हीरा बाबू ! हम कामिनी नहि, कलियुगक कुन्ती छी ।

—कलियुगक कुन्ती ! अर्थात् ?

माननी, प्रणय प्रगल्भा कामिनी हमर छातीपर माथ राखि कहल—
कोनो नारीक संतान - लोभ अहाँ कोना बुझबइ...आ से मास्टर साहेबसँ
असम्भव...हम मास्टर साहेबक आज्ञा पाबि अहासँ याचना... ।

हम सन्न रहि गेलहुँ । विधिक विधान विचित्र । मास्टर साहेबक सरल
रूप सोझा द' नाचि गेल । कामिनि फेर कए लगलीह—अहाँ बडु सरल
लोक छी । मास्टर साहेबकेँ सभटा बूझल छनि आ इनका हमर स्थितिपर
दुख छनि । जखन सुनलनि जे एहि कोठलीमे एक कवि आवि रहल छथि
तँ प्रसन्न भ' हमरा कहलनि किन्तु शंका रहन्हि जे हम अहाँसँ सौजन्य क'
सकब किन्तु हमर सफलता पर धन्यवाद (Congratulation) देल आ
विना काजे पटना गेल छथि ।...

आब हम कामिनीसँ मुक्त कुरसीपर बइसि रहलहुँ आ कामिनी चलि
गेलीह । साँझन एसकरे बउआइत फल्गूक पूल पर बइसल कामिनीक प्रति
स्वीकारात्मक विचारधारा-धारा बहल जाइ छल तावत् विचित्र विघटन भ'
गेल । देखल—रामशिलाक पहाड़ आ तखन धेआन गेल सीताकुण्डपर...।
कामिनीक संतानक देल पिण्ड सकलदेव बाबू पाबि सकताह ? कामिनी-

कुन्तीके लज्जामराज, वायु आ इन्द्रक भूमिका करु ? ओ लोकनि देवता
छलाह । हम मनुख छी ! नहि; कदापि नहि !!

काँपि गेलहुँ आ ऊठि चल अएलहुँ । आ, खएवा काल कहि देलिअनि
जे हम विवाहित, संजत आ परिवारक स्नेही लोक छी किन्तु जीवनक उद्देश्य
विचित्र रहलाक कारणे एना छी । रातिमे कामिनी नहि अएलोह आ हम भरि-
राति जगले, विचार मग्न, छटपटाइत रहलहुँ ।

आ भोरे, सभ सूतले छल; अपन सभ वस्तु बान्हि लेल, एकटा चिट्ठी
लिखि देल—

कवि-प्रिये ! कामिनी !!

मिलन - विरह तँ नित जीवनमे दुनू सत्य अछि कोमल ।

प्रेमक अपन विलक्षण अछि चिर - जतुस आ व्याकुल ॥

एतद्धि !! हीरा

आ, टाटा एक्स्प्रेस ध' राँची चलि गेलहुँ । काँके रोडमे किछु दिन रहलाक
बाद फेर बउआ गेलउँ ।

आ, प्रायः पाँच वर्षक बाद फेर गया अएल छी । टिल्हापर रहइ छी ।
सात दिनसँ कामिनीकेँ ताकि रहलउँ अछि मुदा नहि भेटलीह अछि आ ने
पते लगइए । केकरा की पुछबइ ? आब दू - चारि दिनमे चल जएव, बड़
गरम होइए ।

डाक्टर विमानविहारीमजुमदार

द्वारा

सम्पादित

विद्यापति

सुन्दर भूमिका सहित एवं अद्यावधि उपलब्ध समस्त पद सभक

एक ठाम संकलन : मूल्य १५ टाका मात्र ।

पृ० सं० ६०० ड० क्र० ।

वितरक : मन्त्री, वैदेही समिति, दरभंगा

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

आयल साओन मास सोहाओन साजल जलधर माला
तनने मेघक घोघ गगन सँ विहुँसथि विजुरी बाला
हरिअर कोर पटोर पहिरि कै, छमकथि पावस रानी
चंचल मन मरमोसि रहल छथि बड़ बड़ ज्ञानी मानी
अपन कलुषमय नील हृदयकेँ नभ घनपट सँ काँपै
शत शत व्रण तारावलि लखि लखि कतखन भयसँ काँपै
भूमि उठल कालिन्दी तटपर हरित कदम्बक पाँती
कन्दुक कुसुमक चौदिश गुनगुन करै अमर उत्पाती
घनश्यामक छवि श्याम मधुप आ' ई श्यामल घन माला
देखि अमहि नोरे' भसिआइलि सव विरहिनि ब्रजवाला
वसुधा पीवि सुधा रभसइ छथि किन्तु भसइ छथि राधा
जीवनमे सहजहि संशये छन्हि मरणहुँ आधा बाधा
तजि मर्यादा उछललि सरिता छललि गेलि तेहि पापे'
छिछिआइलि रनवन भुतिआइलि गलइछ तेहि सन्तापे'
अनुखन सनसन सनन सनन सन उपवन पवन कुमारै
लहलह करइत लेपटलि लतिका तरुकेँ मरतारै
चहकल विहगक दल खोंतामे चहकल मेघक छाती
अपने करुण कथा-कहइत अछि लिखि उज्जर बक पाँती
उमड़ल पच्छिम घटा छटा लखि नाचल मुदित कलापी
नदी नहरि डाबर सर उमड़ल भरल कूप ओ वापी
पर्वत सन आकार बना घन दमसि दमसि दमसावै
दिगू दिगन्तमे दिगज दलकेँ तमकि तमकि तमसावै
मधुश्रावणी पावि मुदित छथि मातलि कृषक किशोरी
दिन रजनीकेँ बान्हल संगहि ई घन प्रेमक डोरी

श्रीदीनानाथभा

देखु साजनि धान हरिअर
इषद् पीयर संग सुन्दर
बबा खेतक श्रीश मूकल
चीरि आनल चुप्प चुप्पे
भांपि आंचर तरे ।

चूड़ा कूटि तमहा,
दही सात्विक पौरि
मिश्री आनि राजस
भोग रसगर देबनि कविकेँ
तीनि गुणसँ पार जाइक लेल नीकेँ ॥१॥
ऐं ? अहाँ तँ चोरि केलेँ चुप्प,
पर पुनि शब्द चरचर धम्म हट्टहट
चुड़ा कूटति सुनति सखि सब
पकड़ि बाबा लगे जाइति
तखन मूड़ी खसत नीजा
पुहुमि ताकवि अहाँ
कविकेँ के नरस भोजन कराइति
करब कोन उपाइ
ई टा काज नहि निक भेल ॥२॥

‘धूर जो’ अहाँ तँ छी विचित्रे जीव
चोरी कएल मोहन थोर की ?
दहि दूध आर मलाइ सात्विक
चाटि चुप्पहि लेल गोपिक धरे हुकि
मटकूड़ि हूँ चुड़ि देल

बांसुरि टेरि चोरल चित्त
तइओ चोरि नहि से भेल
उनटे मान तसु बढि गेल
हम तँ एक मुट्ठी धान तमहा चुड़ा ले
अछि लेल पीये ॥३॥

वेश वरगुरु आनि अहाँ चलू चुड़ा कुटै ।
आनू नीक बासन धान भिजबक हेतु,
एके हाथसँ भरिकै अछिञ्जल ।
पीत हरिते धान जोड़िक सोड़हा गनि
दिअ जलमे ।

एक - दू - तिन - चारि...सोलह ।
वशश करु अब ।
धान भीजत तखन आइवि ।
आवि गेला ।

जाइ सेवा लेल साजनि ॥४॥

भेल सब ओरिआन
चर धम हट्ट ऊठल मधुर
उदय - उदयक पूर्व कनि - कनि
वहिर् अन्तर मध्य, नादानाद ।
पर की मोह लीला भेल तइखन
जानि नहि क्यो शकल
मायापतिक महिमा चोरि हूँ कै भांपु ।
चूड़ा दही मिश्री नोन अरु मरचाइ
अधपकु,

‘त्रिगुण मिश्रक ठक्कुराइन’, आदि
दूनू सखी प्रस्तुत कइलि
कम्माधम्म एकादशि दिने
भल संकल्प मनमे लेल ॥५॥

कविकेँ नौत दै लै गेलि ललिता
द्वादशी दिन भोरे भोर ।
कतए ‘नरसी’ ?

हुपकि छलिआ

हे विधाता धम्म राखू !!
आब पार न होएत कौखन ? !
ठोकि अपन ललाट फिरली ।
अनमनस्के घरे दुकली ।
‘आह ! ई की ?’ भोग पावु हिहार
चोरा ।
तिगुन तन्मय भेल !! अतिशय ‘दीन’ !†

† प्रोफेसर श्रीहरिमोहनभाक ‘चूड़ा-दही’ लेखपर आधारित

पन्द्रह अगस्त

श्रीगंगाधरमिश्र

भारत - देशक थिक गर्व - पर्व—
ई दिवस दिव्य पन्द्रह अगस्त,
एहि दिवसमे नष्ट भेल छल—
अंगरेजी सत्ता संघाती;
गेल दासता - निशा एतय सँ,
प्रकट भेल स्वातन्त्र्य - प्रभाती ।
भारत - जन - मानस - काननमे—
आएल वसन्त हर्षक प्रशस्त ॥

पूर्ण सुसज्जित अछि स्वागत हित—
रुधिर—धौत ई ‘जलियाँवाग’;

‘हल्दी वाटी’ देखा रहल अछि—
आइ अपन हृदयक अनुराग ।
जन-जन प्रोदित कण-कण पुलकित;
युग-युगक विषमता भेल ध्वस्त ॥
लक्ष्मी, सुताप, ओ ‘अमर’ ‘कुमर’
‘गोखले’ ‘तिलक’ केर कीर्ति-कुंज—
ई भरल-पुरल अछि आइ पावि—
शुभ - ‘कर्मचन्द्र’ - नव - प्रभा - पुंज ।
‘सेवागोम’क सन्तक चर्चा—
अर्चामे सब अछि आइ व्यस्त ॥

डा० श्री श्रीकृष्णसिंहजी

मुख्य मन्त्री, बिहारकेँ समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

मैथिली

संस्कृत

धन्य आई ई सभा कि अएला-
मुख्य मन्त्रिवर श्री श्रीकृष्ण ;
मैथिल जनता केर आँखि छल-
जनिक दर्शनक हेतु सतृष्ण ।
स्वागत - सामग्री की आनब
तुच्छ बुझै छी सब साधन केँ ;
कीर्ति - लता सँऽ कवि विद्यापति-
स्वर्य सजाओल एहि आङन केँ ।
'उदयन' 'कुसुमांजलि' सँऽ कैलन्हि-
जाहि देश केँ तत्त्व - सुरभि - युत ;
की हम फूलक माला आनब-
ततय आई अपने हित हे बुध !
पाँच वरष पहिने हम पाओल-
विबुध - 'महेश'क विमल - 'प्रसाद' ;
दूर भेल अछि आई जाहि सँऽ
यातायात क सब अवसाद ।
सड़क बनल, पुल विद्यालय
पोखरि कूपक नव निर्माण
मिथिलावासी करत 'महेश'क
ओ श्रीकृष्ण क नित गुण - गान ।
प्रारम्भहिँ सँऽ एहि प्रान्त मे
अपने रहलहुँ बनल प्रधान,
कएल एहि प्रान्तक हित अपने-
सतत उन्नतिक विविध विधान ।
मुख्य - मन्त्रिवर ! हमर निवेदन
राखव हमरालोकनिक ध्यान
मिथिला मैथिल केर हितैषी
अपने सन केओ नहि आन ।

आषाढ़ एष जन - जीवन-युक्ति-युक्तः
सुस्वागतं वितनुते हि रसाल - हस्तः
धन्योऽद्य मैथिलजनोऽस्ति मुदा समस्तः
यत्राऽऽगतः प्रमुखमन्त्रिवरः प्रशस्तः ।
हे मुख्यमन्त्रिवर ! विज्ञ सदा त्वदीयाम्-
गायन्ति कीर्तिमतुलां जनता इहत्याः
काले कृतो हि भवता जनतोपकारः
कृत्येन तेन मिथिला भवतां कृतज्ञा ।
मार्गः सुनिर्मित इहाऽस्ति जलाऽऽशयश्च
विद्यालयोऽपि रचितः कृतसुव्यवस्थः
श्रीमन् 'महेश' विबुधस्य कृपामवाप्य
श्रीकृष्ण सिंह-दयया च वयं कृताऽर्थाः ।
सकलया कलया कलितः कृती
विशद - चारु - विचार - महाव्रती
प्रमुखमन्त्रिवरो विबुधो महान्
जनतया नतयाऽऽद्रियतां भवान् !
मिथिलामुन्नयन्नित्यम्

मैथिलान् रक्षयँस्तथा

मुख्यमन्त्रिन् ! चिरायुष्टं

सहस्रं लभतां भवान् ।

समर्पकाः

आचार्यः श्रीगङ्गाधरमिश्र

ज्योतिषी श्रीलक्ष्मीकान्तभाशास्त्री

संस्कृत युवक-संघ' एवं

मैथिल युवक-गण

रौ ठकलौइया हम हरा गेलियौक

श्रीपुरायानन्दजी मैथिलीक भविष्य साहित्यकार छथि । हिनकर हास्यात्मक एवं व्यंग्यात्मक रचना बड़ लोकप्रिय अछि । आशेटा नहि अपितु विश्वास अछि जे क्रमिक एकर रसास्वादन भेटैत रहत !

मुसाइ पाठक चाहे परम ब्रह्म-ज्ञानी छलाह चाहे परम मूढ़ । हुनका साधारण मनुष्यक श्रेणीमे राखब हमरहि लोकनिक मूढ़ता सिद्ध करत । हँ, जौ ई प्रमाणित करी जे ओ अफीमची छलाह त' दोसर बात । कियैक त अफीमचीक पिहानीमे सुननहुँ छलियैक जे ओकरा लोकनिकेँ अपन देहक ज्ञान नहि होइत छैक । त भ' चलथ मुसाइ पाठकसँ पहिने अफीमचीयेवला दुटप्पी पश्चात् त' मुसाइ पाठक रखलें छथि ।

दू टा अफीमची संगहि एक दूरक यात्रापर चलल । दूर जयबाक रहैक रास्तामे सांझन एक भयानक जंगलमे भय गेलैक । दुहू गोटे एक वेश पैघ वट-वृक्षकेँ टेबि विश्रामस्थली बनौलक । यात्रामे नशामे नहि रहबाक चाही ई सोचि दुनू ओहि दिन अफीमेक सेवन कयने यात्रा कय रहल छल । किन्तु ओहिमेसँ एक जे किछु दोसरसँ वेशी मदकी छल से अपन मित्रसँ दोगमे अफीमक डिब्बा रखने रहथ । 'जौ किनसियाइत अभावमे मराहे लगलहुँ' वला उपयुक्त तर्क ओकरा प्रसित कयने रहैक । जे किछु, दुनु सूतल । दोसरकेँ पूर्ण रुपेण निद्रादेवीक दास बनल वृक्ष डिब्बावला व्यक्ति उठल आर' डिब्बामेसँ वेश पैघ विड़िया अफीम निकालि ओकर सेवन कयलक । बेचाराकेँ नहि रहि भेलैक । पुनः अफीमक डिब्बाकेँ अपना सीरम तर राखि ओ निश्चित भय सूति रहल आ'र चाहवे की करियैक ?

आब दोसरक बात सुनू ओहू बेचाराकेँ बिना अफीमक नींद नहि होइक । ओ कच्छमच्छ करैत अंगैठीमोर कयलक आर उठि बैसल । ठहाठहि इजोरियामे मित्रक सीरम तर अफीमक डिब्बाकेँ देखि

हर्षातिरेकसँ ओकर मन - मयूर नाचय लगलैक । ओहो ओहि डिब्बाकेँ
 चुपचाप फोलि, देलकै ६ पैघ मात्रामे । हड़बड़ीमे डिब्बा ई अपनहि सीरम
 तराखि सूति रहल निश्चिन्त भय क' । आव जखन राति दूक अमल भेलैक
 सखन पहिल अफीमचीक निशा किछु कम्म होयबाक कारणेँ निन्न टुटलैक ।
 परन्तु निशा एकदम स्वाहा नहि भेल रहैक ओ पड़ि गेल विकट परिस्थितिमे ।
 जे माथ लग डिब्बा राखि सुतल छल ओएह हम छलहुँ सोचलक ओ । आर
 डिब्बा एखन ओहि माथ लग छैक । तँ हम हम छी आकि सुतलाहा हम
 छी । बेचारा परिस्थितिकेँ असकरे सामना नहि कय सकल । लागल भोकासी
 पारि कय कानय । दोसर उठलैक । सभ बात स्पष्ट कहैत ओ अप
 'सिनियर'केँ बुझौलक जे तोंही तों छह । कानह जूनि ।

सुनल भेल । आव हमर प्रश्न अछि जे मुसाइ पाठकक वृत्तान्त सुनलाक
 पश्चात् हुनका अपने लोकनि कोन श्रेणीक मध्य रखबैन्हि जखन हुनका निमित्त
 तीनटा श्रेणी हम अपनेक समक्ष रखलहुँ । ई तीनू थिक ब्रह्मज्ञानीक श्रेणी
 आर मदक्कीक श्रेणी ।

हड़बड़ीक कोनोटा प्रयोजन नहि । पहिने मुसाइ पाठकक रूप हम देखबैत
 छी । मुसाइ पाठककेँ एकटा नोकर छलैन्हि ठकलौइया । बेश चुनल नाम
 रहैक ओहू बेचाराकेँ । 'जस दूल्हा तस बनी बराता ।' मुसाइ पाठकक अप-
 नहि कोन बेजाय नाम रहैन्ह । एहन-एहन नाम त' आन आन समाजमे
 मोमबत्तियो ल'क जाइत नहि भेटत । छोड़ू, आइ की भ' गेल अछि
 से नहि जानि । बड़ भसिया जाइत छी । पाठक कतहु हमरहुँ ने कोनो
 विशेष श्रेणीमे राखि देखि, हँ, त' मुसाइ पाठक एक दिन ठकलौइयाकेँ
 कहलखिन्ह—रौ ठकलौइया, आइ हमरा ईच्छा होइत अछि जे हटिया चलितहुँ ।

ठकलौइया—चलल जाओ सरकार । एके मइलपर त' हटिया लगैत छैक ।

मु० पा०—रौ, हमरा एकटा आइ पैघ आशंका भय रहल अछि ।
 वामा आँखि फड़कि रहल अछि । हम हटियामे हरा ने जाइ ।

ठक०—मालिक, अपने केहन गप्प करैत छी की । एहि जयबारमे अपनेके
 के नइ चिन्हैत है । दोसर बात जे अपने वृद्ध छी आर हटियो ने पैघ हैक ।
 लोक सुनत त' की कहत ।

मु० पा०—नहि रौ ढकलौइया, तू निअय जान जे आइ हम हरा जय-
बौक । तों कतय छैह । हमरा कोनहु विपत्तिक पहिने भान भय जाइस अछि ।
तों सोलकन्ह की बुझबहिक ।

ढक०—मालिक, अपनेक बात सुनिक' हम लुबुध भय गेल छी । नवटोलियाक
हटियापर हमरा अछैत अपने हरा जायब ई बात हम नइ मानव ।

मु० पा० (क्रुद्ध भय)—ढकलौइया !

ढक०—मालिक !

फेर ढकलौइयाकेँ हरलैक ने फुरलैक महीसक घर परसँ लपकि कय
तीन-चारि हाथ लत्ती लागल एकटा सजमनि तोड़ि अनलक । ओ लत्तीकेँ
मुसाइ पाठकक गर्दनिमे लपेटि देलकैन्हि आर सजमनिकेँ घड़ीक दोलकक
सदृश हुनका छातीक मध्य लटकोलक । मुसाइ पाठकक ई स्वरूप देखि
देखनिहारकेँ मरखाहि गायक स्मरण भय जाइक ।

पुनः ढकलौइया बाजल—मालिक, आव जौँ अपने हरेबो करवै त
कहुआ देखि क' खोजि लेब । अपने अपना गर्दनिमे कहुआ देखव त' वृक्ष
जे नइ हरेली है ।

मुसाइ पाठक गद्गद् होइत बजलाह—रौ ढकलौइया, यद्यपि तों सोल-
कन्ह छै तथापि चारि कैआक बुद्धि छौक । ऐन मौका पर अलवत्ता उपाय
सोचलैह अछि । आइ, हमहूँ मानि लेलिआँक तोहर बुद्धिक लोहा ।

ई कहि मुसाइ पाठक पैरमे ठिकरी पनही तथा देहमे खुटिया - मिर्जई
सजमनिक तरमे पहिर प्रस्थान कयलैन्हि हटियाक । पाछेँ लागल ढकलौइया
चलल मरखाहि गायक चरबाहक सदृश । आध घंटाक परिश्रमक पश्चात्
दुनू मालिक-नोकर हटिया पहुँचलाह । मुसाइ पाठक एहन हुलिया बनलौक
पश्चात् मध्य हटियामे पैसब बुधियारी नहि बुझलैन्हि । काते - करोट घुमैत
रहलाह । किनसियाइत हरा जाइ । परन्तु मनुक्खक सोचलाहा थोड़बे कार्य
छैक । मुसाइ पाठककेँ अपन प्रबल इच्छा भेलैन्हि । भुल्लर महतोक दोकान
पर मुसाइ पाठक गेलाह । ठिकरी पनही खोलि ओ एज्जर दपदप जाजिमपर
बैसलाह । आम छापवला एक जोड़ नूआ किनलन्हि जोशमे ठिकरी
पनही दोकानहि पर बिसरि मुसाइ पाठक हटियाक जन - समूहक बीच पुनः
अयलाह । भीड़ किछु बेशी भय गेलैक । मुसाइ पाठक सोचय लगलाह जे

एहिनामे लोक हराय जाइत अछि । तावत हुनकर दृष्टि अपन पैरपर गेलैन्हि । ठिकरी पनही गायब छल । पुनः काँखतर आग छापक साड़ी देखलैन्हि । सोचय लगलाह जे अयबाक काल पैरमे ठिकरी छल तथा काँख तर नुआ नहि छल । हो ने हो हम हराय गेलहुँ । भोकासी पारि कानय लगलाह । ठकलौइया रे ठकलौइया, हम हरा गेलथीक । ठकलौइयाकेँ परामय अय गेलैक । ई ठोके लोक लागि गेल केशो मुसाइ पाठककेँ बताह बुझैन्हि त' केशो टाटकी । ठकलौइया दाढ़ी पकड़ि-पकड़ि कहैन्हि—मालिक, होश करू । होश !! लोक देखू हँसि रहल है । अपने नहि हरेली है । अपने छेबे छोकी । परन्तु के मानैये । मुसाइ पाठक हबोठकार भय क' कानि रहल छलाह । एतबहिमे ठकलौइयाक दृष्टि सजमनिपर पड़लैक, ओ बाजल—मालिक, देखू इयैह कदुआ लटकल है । हम कहले रही जे हरायब त' कदुआ देखि लेब ग' से देखैत नइ छिकी ।

मुसाइ पाठक सम्हरलाह । एक जुट सोलकन्हक एहि प्रकारक बुद्धि हुनका स्तम्भित कय देलक ! ओ होशमे अवैत बजलाह—'रौ ठकलौइया, तखन बूझि पड़ैत अछि जे पनहीये हरा गेलौक अछि ।'

पनही ताकल गेल । मुसाइ पाठक सोभे गामक रास्ता पकड़लैन्हि । रास्तामे ठकलौइयाकेँ कहलथिन्ह—'देखलै, हम कहलथीक किने जे विपत्तिक मान हमरा पूर्वहि भय जाइत अछि ।'

आब कहू मुसाइ पाठक की छलाह—ब्रह्मज्ञानी, मूढ़ किंवा मदकी ?

मैथिली आपाक अनुपम कविता - संग्रह

नवीन काव्यक ज्योति - स्तम्भ

स्वरगन्धा

[कवि राजकमल द्वारा रचित]

प्राप्तिस्थान

पञ्चव-कार्यालय

पोस्ट नेहरा

दरभंगा

मूल्य बारह आना

श्रीराजकमल चौधरी

६/१ वामनपाड़ा लेन

कलकत्ता - १६

प्रस्तावित मिथिला-चलचित्र सहकारी औद्योगिक समिति लि० दरभंगा

महोदय

मिथिलाक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आदर्श सम्पूर्ण भारतवर्षका नहि अपितु विदेशभूमे बहुत पूर्वसँ ख्याति प्राप्त कएने अछि । एहिठामक शिक्षा-व्यवस्था, दार्शनिक पद्धति तथा संस्कृतिसँ कतेको उद्भूत विद्वान् प्रेरित भ'क' कतेको विषयकेँ ग्रहण कएने छथि जकर उल्लेख करब एते अतिशयोक्ति मात्र हैत ।

उपर्युक्त दृष्टिकोण राखि ई आवश्यक बुझना जाइछ जे फिल्मक माध्यम द्वारा वर्तमान समयमे एहि संस्कृति ओ सभ्यताक व्यापक प्रसार एवं प्रचार भ' सकैछ जाहिसँ सुलभ रूपेँ जनसाधारण आनन्द उठा सकथि । फिल्म द्वारा संसारक प्रत्येक भागमे स्नेहक प्रसार भ' सकैछ तथा लोककेँ शिक्षित कैल जा सकैछ तथा मूल्यांकन भ' सकैछ । एहि दृष्टिँ हमरा सबहिक राष्ट्रिय योजना पर्यन्त सभमे फिल्मक महत्वक बढि जाइछ ।

प्रस्तावित मिथिला - चलचित्र सहकारी औद्योगिक समिति लिमिटेड, दरभंगा एक गोट क्रियाशील संस्था एही आधारपर स्थापित भेल अछि । एहिमे सभक सहयोग अपेक्षित अछि, तेँ एकर शेयर (Share) क मूल्य १०) मात्र ततेक कम राखल गेल अछि जे जनसाधारणकेँ अभूतपूर्व सहयोग प्राप्त हो ।

एहि समिति द्वारा आरम्भ भ' वृत्त-चित्र (Documentary Film) क निर्माण हैत । वृत्तचित्र सामान्यतया ओ चित्र बुझल जाइछ जाहिसँ बिना कोनो व्यावसायिक कुशल अभिनेताक सहायतासँ कोनो विषय वस्तुक यथार्थ एवं तथ्यपूर्ण प्रतिपादन भ' जाइछ । एहिठामक सांस्कृतिक वास्तविकताक तेहन नैसर्गिक वातावरणमे अंकन वृत्त-चित्र द्वारा हैत जे दर्शककेँ यावतो तथ्यसँ परिचय तँ प्राप्त हैबे करत, अपितु ओहि विषय सभकेँ नवीन रूपमे ग्रहण करबाक दिशा सेहो प्राप्त हैत, यथा—लोक-नाट्य, लोक-गीत, लोक नृत्यक अतिरिक्त क्रमिक शैक्षणिक चित्र, समाचार-चित्र तथा कथानक - चित्रक सेहो निर्माण

है। एहि समितिक उद्देश्यमे मिथिलाक प्राचीन शास्त्रीय एवं परम्परागत
गीतक रिकार्डिंगक सेहो व्यवस्था रहत तथा एही उद्देश्यक अन्य विषयक सेहो
समावेश रहत।

आशा अछि जे अपने लोकनि एहि महान् कार्यमे सहयोग एवं साहाय्य
प्रदान कर संलग्न आवेदन-पत्र शुरू-सहित स्वयं एवं अनकहु द्वारा पठाएब।

निवेदक

श्रीरमानन्दमिश्र

श्रीशंकरमिश्र

मन्त्री, को-आपरेटिव बैंक, दरभंगा

संयोजक

... एहिठामसँ काटू ...

आवेदन-पत्र

संयोजक

प्रस्तावित मिथिला-चलचित्र सहकारी औद्योगिक सहयोग समिति लि०,
लालबाग, दरभंगा

महोदय

अपनेक प्रस्तावित मिथिला-चलचित्र सहकारी औद्योगिक समिति लि०,
क उद्देश्य एवं योजना बुझि बड़ प्रसन्न भेलहुँ। हमर सहयोग एहि कार्यमे
सतत रहत। हम दस टाका वला.....टा (Share) किनबाक हेतु अपन
स्वीकृति दैत आरम्भिक आयोजनार्थ सहर्ष १) टाका पठबैत छी से स्वीकार
कैल जाए।

हस्ताक्षर.....

ता०.....

पूरा नाम.....

पता.....

ज्योतिषी लोकनिक प्रमाद

‘वैदेही’ १४० म अङ्कमे हृद्यतम श्रीपुलकितम्मा ज्यौ० आ० क लेख पढ़ि एहि हेतु प्रसन्नता भेल जे कहुना हमर प्रश्नक उत्तर देबाक हेतु उग्रत तँ भेला ! हमर प्रश्न बुझबाक यत्न नहिँ कै, जेहन उत्तर हेबाक चाही तेहने अवश्य भेल छनि ।

आश्चर्यक विषय ई जे० म० म० महेशठाकुरक निबन्धकैँ मानितहुँ ओकर प्रतिकूल क्रिया कैल जाइछ । सन १३५१ सालक महातिचारक विवाद-मे हमर विरोधी लोकनि अपन-अपन मत ‘मिहिर’ मे प्रकट कैने छथि, जे

(१) वर्षपूर्ति मँ पहिने यदि बृहस्पति अग्रिम राशि मे जाथि तँ अतिचार ।

(२) अतिचारानन्तर यदि पुनः वक्रमे पूर्वरशिमे आवि जाथि तँ लघ्वा-तिचार ।

(३) यदि अतिचारानन्तर-पुनः पूर्वरशिमे नहिँ आवि जाथि तँ महातिचार । ई स.म. महेशठाकुरक सिद्धान्त छनि । जकरा हमहुँ ओ सब मानै अछि ।

एहि सिद्धान्त कैँ मानि हमर पूज्य प्रातः स्मरणीय गुरुवर (स्व. श्री-श्रीनन्दनमिश्र ज्यौ. आ.) हमरा मतक समर्थनमे अपन सम्मति अन्तमे लिखि कै देने छथि जे प्रायः सभकै विदित अछि ।

हम देशक समस्त ज्योतिषविज्ञ कैँ पुछै छिअनि जे ऊपर प्रदर्शित स.म. महेशठाकुरक सिद्धान्त मान्य वा नहिँ ? । यदि मान्य तँ एहि सिद्धान्तानुसार यदि ५१ सालमे क्यौ महातिचार सिद्ध कै सकथि तनिका हम एक सहस्र मुदा पारितोषिक देबनि । अन्यथा ओ एकमात्र देखि

सभसँ अधिक आश्चर्य तँ ई जे एहि सिद्धान्तक आधारपर श्रीपुलकितम्मा ६०सालक ‘मिथिलामिहिर’ मे लिखने छथि जे

‘यदि हम परम्परा प्रचलित अतिचारानुसार अतिचार लिखौ तँ ६१, ६२, ६३ तीनू वर्ष अशुद्ध भै जायत तेँ हम आव एहि रूपक अतिचार नहि लिखब ।’ एकरा बिसरि गेल छथि ।

एक बात खिसिआय कै लिबै छथि जे

‘हुनका लेखेँ ज्योतिष शास्त्रक मर्मज्ञ वैहटा छथि ।’ पाँच सै वर्षक भीतरमे ज्योतिषक मर्मज्ञ क्यौ नहि भेल छथि ने एखन क्यौ छथि ।...

हम एकरा स्वीकार करै छी । ई हमर अभिप्राय ओ ठीक बुझने छथि । ५ सै वर्ष की ? हजार - हजार वर्षक बाद क्यौ - क्यौ मर्मज्ञ होइछ । तँ —

हम अपन शब्दके पुनः दोहर छोवै जे—‘अपना देशमे ओखन प्रतिभावान् विद्वान्क कमी नहि’ किन्तु अधिकांश लोक आलस्यवश प्रमादने पड़ल छथि । जे क्यौ फलितस्कन्ध ओ सिद्धान्त स्कन्धक सम्यक् अध्ययन कर- ताह वा कैने छथि सैह ज्यौतिषक मर्म बुझि सकै छथि सभ नहि । ई हमही नहि कहै छी—ज्यौतिषाचार्यमे श्रेष्ठ श्रीभास्कराचार्य कहि गेल छथि । जे—
प्रदा ‘अन्यथा नामधारी’ एहन नामधारी ज्यौतिषीक ओत हमर प्रश्न नहि अछि ।

(१) ‘कचिद् वक्रातिचाराभ्यांयदाकामति भास्करः’ एकर अर्थ नहि स्पष्ट कै—सूर्य ओ चन्द्रमा—कदाचित वक्र वा अतिचारो नहि होइ छथि’ लिखने छथि ।

एहिठाम वक्र ओ अतिचार—की कहवैछ ई बात जरूरी ज्ञात भै जेते तकरहि म० म० महेशठाकुरक पाँतीक अर्थ सम्यक् लगतै; सबकेँ नहि । यथा-

‘वक्राति वक्रा विकला मन्दा मन्दतरा समा ।

तथा शीघ्रातिशीघ्रा च ग्रहाणामष्टया गतिः ॥’

की एहि सूर्यसिद्धान्तक वचनमे सूर्य ओ चन्द्रमा ग्रहमे नहि गनल गेल छथि ।

(२) ‘हम हारा लग केँ लग मानैत छी’ ई कथा यदि हमर ‘लग्न-विवेक’ केँ नहि देखि लिखने छथि तखन हुनक दोषे की ? यदि लग्न-विवेककेँ देखि लिखने छथि तैऔ हम हुनक दोष नहि दै हुनक बुद्धिक बल बुझैत छी ।

अन्तमे ओ परम्पराक दोहाइ देने छथि—किन्तु जे बात पछिला पीढ़ीक लोक (बाप-दादा) नहि बुझलक से अगिला पीढ़ी नहि जानि सकैछ ई वाजव वा लिखव मैथिल विद्वान् कहौनिहारक हेतु हास्यास्पद मात्र थिक ।

शुद्ध (शास्त्र सिद्ध) परम्पराक रचे हमर सर्वदा उद्देश्य अछि । म० म० महेशठाकुर आदिक निर्मल शास्त्र सम्मत निबन्धक रचा कोना हो ताहा यत्नमे हम छी, आ सबकेँ रहवाक चाहौ ‘एतवा अवश्य जे हमर वक्राति-चारनिर्णय’ जे प्रकाशित अछि तकरा बुझवाक यत्न प्रायः अधिक व्यक्ति नहि कैने छथि । ने हमरहि बुझैवाक अवसर भेल अछि ।

अतएव हम मै० वि० परिषद् (पण्डित सभा) सँ पुनः पुनः नम्र निवेदन करैत छी जे ओ एक दिनमात्र एहि विषयपर विचारक अवसर प्रदान करै ।

हम एहि हेतु सदा उद्यत छी । विद्वत् परिषद् (पण्डित सभा)—एक एहन व्यक्तिकेँ प्रतिवादक हेतु चुनय जनिका फलित-सिद्धान्त दूनूक ज्ञान होइन । संभव एक पहरमे निर्णय भै जायत । केवल दूइ व्यक्ति वाद प्रतिवाद कैनिहार होथि ।

आशा करै छी मैथिल पण्डित सभा एहि हेतु यत्नशील होयत ।

—श्रीसीतारामभा, काशी



बिहार विश्वविद्यालयक १९५७ परीक्षा मध्य बी. ए. (आनर्स) मैथिलीमे सर्वप्रथम छात्र श्रीरामदेवभा । ई मैथिली साहित्यक परिचित एवं भविष्य लेखक छथि ।

मैथिलीक उच्चकोटिक प्रकाशन

१. मैथिली साहित्यक इतिहास	५)	१०. कृष्णजन्म	१॥)
२. मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता-		११. एकावली परिणय	४)
(दूनु भाग)	२)	१२. चित्रा	२)
३. विवेचना	१)	१३. आत्ममर्यादा	१॥)
४. अम्ब-चरित	२)	१४. गीति-माला	१=)
५. मिथिलाभाषा प्रकाश	२)	१५. रागतरंगिणी	६)
६. विद्यापति (खगेन्द्रनाथ)	१५)	१६. रावणवध-महाकाव्य	१॥)
७. मैथिली-गीति-रत्नावली	१॥)	१७. रचना-संग्रह (प्रथम भाग)	५)
८. मिथिला रामायण	५)	१८. परिचय-पाठ	१॥)
९. मैथिली रामायण	२॥)	१९. सम्मेलन-साहित्य-समीक्षा	२)
		२०. मैथिली कुसुमाञ्जलि	१॥)

बिना अग्रिम एडवान्सकेँ बी० पी० पी० नहि जाइछ ।

प्राप्ति-स्थान : मन्त्री, वैदेही समिति, लालबाग, दरभंगा ।